RNI Regd. No. GUJMUL/2016/68324
साल-१०, अंक-१, पृष्ठ-४०, मूल्य-₹ ३०, दिनांक : ०१ जून-२०२४
Year-10, Issue-1, Page-40, Price : ₹ 30, Date : 01 June-2024

CRIME FORCE

.... Always Alert, To Stop The Crime

क्या २०३० तक देश के ४०% लोगों को पीने का पानी नहीं मिलेगा ?

मोदी की नैया अब टीडीपी और जेडीयु के सहारे...

Vipulbhai Raiyani
98797 41480

Authorised Dealer

UltraTech CEMENT
The Engineer's Choice

UltraTech
BUILDING PRODUCTS

Birla White
THE WHITEST WHITE CEMENT
My kind of design

Since 1760
Lewis Berger
Paint your imagination

ASTRAL
where INNOVATION flows

UTKARSH
TMT BARS

CERA
Sanitaryware | Faucets | Tiles

asianpaints

Jaquar
experience bathing

Sintex

KERAKOLL
The GreenBuilding Company

RADHIKA ENTERPRISE
Pedak Road,
Patel Park Society, Rajkot.

radhika.enterprise6825@gmail.com

तंत्री स्थानसे...

RNI Regd. No. GUJMUL/2016/68324
साल-१०, अंक-१ , पृष्ठ-४० मूल्य-₹३०
दिनांक : ०१ जून-२०२४
"Crime Force" (Monthly)
Volume-10, Issue-1, Price-₹30
1st June-2024, Page: 40

मालिक-प्रकाशक-मुद्रकश्री
रणजीतसिंह जादव
Mob. : 098250 63283

तंत्रीश्री
विजय साणथरा
Mob. : 075750 55333

एडमीन चीफ
विपुल ब्रह्मभट्ट
Mob. : 098250 10288

निवासी तंत्रीश्री
हसु कपासी
Mob. : 098792 27272

सहतंत्रीश्री
सतीष सोलंकी
Mob. : 092746 76760

सालाना लवाजम
भारत में : ₹ ३६०/-
विदेश में : ₹ २५००/-

भ्रष्ट अधिकारियों के पापो से कब बचेगी निर्दोष लोगों की जान?

हाल में राजकोट, गुजरात में TRP गेम झोन नामके मॉल में आग लगी और ९ बच्चों समेत ३० से ज्यादा निर्दोष लोग इस आग में इतना झुलस गए की लाशों को पहचानने के लिए सम्बन्धीयो का DNA टेस्ट का सहारा लेना पड़ा । जरा सोचिए, कितनी दर्दनाक मौत हुई होगी मरनेवाले लोगों की । हाल में दिल्ली में भी एक बेबी केर सेन्टर में आग लगने की वजह से ७ बच्चो की मौत हुई थी । थोड़े समय पहले वडोदरा, गुजरात में हरनी लेक में नाव पलटने से १२ बच्चों और २ शिक्षको की मौत हुई थी । उसके थोड़े समय पहले सूरत, गुजरात में एक कोचिंग क्लास में आग लगने से २० छात्राएं और एक टीचर की मौत हुए थी । दो सा पहेले मोरबी में झुलते पुल की तूटने की वजह से करीबन १५१ लोगोने जान गवाई थी।

इस सब घटना के जिम्मेदार है सिर्फ़ और सिर्फ़ भ्रष्ट सरकारी तंत्र । कोई भी उद्योग, व्यापार या संस्थाए शुरू करने के लिए लाइसेंस की जरुरत रहती है और लाइसेंस लेने के लिए संभवित लागु होने वाले सरकारी विभाग से जरूरी सर्टिफिकेट जैसे कि फायर, बांधकाम, सेफ्टी के सर्टिफिकेट लेने पड़ते हैं । और ये सब सरकारी विभाग के बाबूओ अपनी जेब गर्म करने के लिए अपने निजी स्वार्थ के खातिर नीति नियमो की ऐसी तैसी करके बिना कुछ देखे, बिना आवश्यक तपास किए ऐसे ही लायसेंस और सर्टिफिकेट दे देते हैं । जोखमो के लिए भी जांच नहीं करते और उनकी ऐसे करतूतों और बेदरकारी से ऐसे दर्दनाक हादसे होते है और निर्दोष लोगों अपनी जान गंवाते है । यह सब सिस्टम में बदलाव करना बेहद आवश्यक है । उसके लिए सरकार को ऐसे भ्रष्ट अधिकारियों को कड़ी सजा देनी चाहिए और ऐसे ठोस कदम उठाने चाहिए की ऐसी घटना घटने की नौबत ही ना आए और निर्दोष बच्चों और लोगों की जान बच जाए ।

मुख्य कार्यालय
राज कोम्प्लेक्ष, स्टार प्लाझा के सामने,
फुलछाब चौक, राजकोट - ३६० ००१

Website : www.crimeforce.in
E-mail: crimeforce9@gmail.com

London (U.K.) Bureau Office	Mumbai - Bureau Office	Surat - Bureau Office	Baroda - Bureau Office	Ahmedabad - Bureau Office	Junagadh Bureau Office
NISHANT K. JANI Mo. +44 7999470980 43 Bowrons Ave, Wembley, HA0 4QS London (U.K.)	Akashbhai P. Shah Mo.+096196 70007 Arham Group Office No.24, 1st Floor, 110-Kakakuwa Bldg., 3rd Bhoiwada Corner, Bhuleshwar, Mumbai-400002	Ramjibhai N. Panseriya Mo. 97125 74032 Vinod M. Lavri Mo. 9825112244 Plot No. 1 Amul Society Near Shreeram Marbal bhatar, Surat-394510	Yagnesh Thakkar Mo. 099255 55400 Shailesh Thakkar Mo. 063548 60273 Think Overseas 301 Annapurna Complex, Opp. Makarpura Police Station, B/s Aangan Tower, Manjalpur, Vadodara-390011	Hitesh P. Prajapati Mo. +084600 03121 Parth P. Shah Mo.+097269 06767 328 Sangath Mall, Opp. Vishwakarma Engg. Collage, Motera, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005.	Ashok Makwana Mo.+9199247 69400 Apco Autosales Pvt. Ltd. Alpha Vidhaya Sankul, Rajkot Highway, Vill - Vadal. Junagadh-362 001

मुद्रण स्थान : श्री हरि ओफसेट, आरती अेस्टेट, ढेबर रोड (साउथ), राजकोट-३६०००२

CRIME FORCE HELPLINE No. : +91 73599 33599

CRIME FORCE
सत्यमेव जयते

अनुक्रमणिका...

राजकीय	05
ईन्टरनेशनल माफीया स्टोरी	08
नेशनल क्राईम स्टोरी	12
ड्ग-ए-दास्तां	15
अनसंग हिरो	17
ग्लोबल वोर्मिंग	23
टुरीझम	25
डरावनी दुनिया	27
अहो वैचित्र्यम्	29
स्वास्थ्य	31
मुंबई के अंडरवर्ल्ड की	
खोफनाक बातें	33

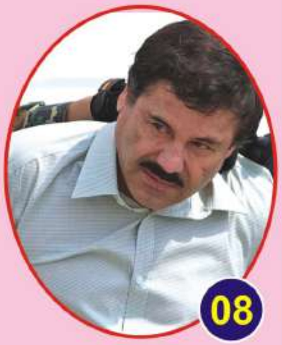

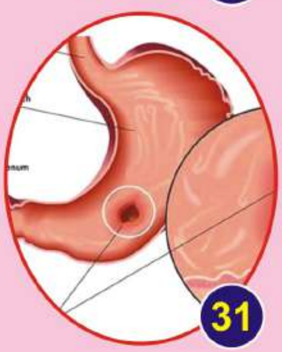

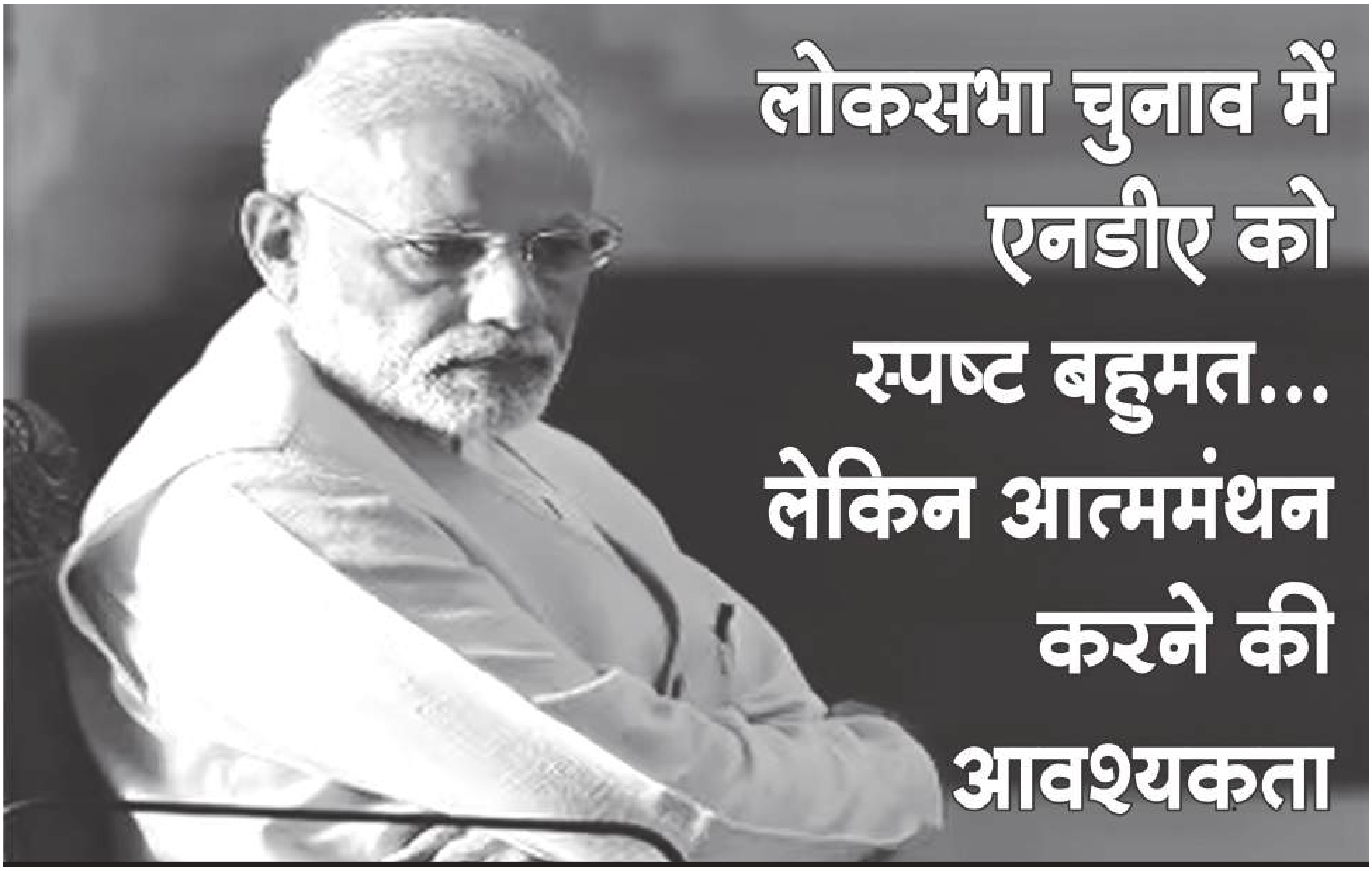

लोकसभा चुनाव में एनडीए को स्पष्ट बहुमत... लेकिन आत्ममंथन करने की आवश्यकता

राजकीय

◆ रणजीतसिंह जादव ◆

दोस्तों, जैसे हमने पिछले अंक में कहा ऐसा ही हुआ है। वास्तव में यह चुनाव ऐतिहासिक बना है और सभी राजकीय दल के लिए एक कसौटी समान रहा।

इस चुनाव में चरण जैसे जेसे आगे बढ़ता गया वैसे चुनावी मुद्दे भी बदलते गए जैसे कि देश का विकास, फिर परिवार वाद, फिर भ्रष्टाचार,फिर मंगलसूत्र, फिर मुस्लिम आरक्षण, हिंदू मुसलमान, बीच में पाकिस्तान भी आया,देश का आखरी चुनाव, अल्प संख्यको का शोषण, संविधान खत्म। इस में मूल चुनावी मुद्दे - गरीबी, बेकारी, महंगाई, दलित-पिछड़े लोगों की उन्नति जैसे मुद्दे मानो की गायब ही हो गए।

केन्द्र में एनडीए को स्पष्ट बहुमत तो मिला, लेकिन उम्मीद के मुताबिक़ उनको बैठके नहीं मिली। भाजपा अपने अकेले दम पर २५० पार भी नहीं कर सकी। बिहार में जेडीयू ने भाजपा के बराबर बैठके हासिल की। एनडीए को यूपी, महाराष्ट्र, राजस्थान, पश्चिम बंगाल में नूकसान हुआ है। यूपी में ऐसा लगता है की लोगों ने राष्ट्रीय स्तर का विकास नज़र अंदाज़ कर के स्थानीय दल में विश्वास रखते हुए एसपी को ३७ सीटे दिलवा दी। यहां मोदी -योगी की जोड़ी का जादू का असर कम हो गया लगता है। सपा अब देश की तीसरी बड़ी पार्टी बन गई है। अयोध्या में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को बड़ा झटका तब लगा जब पार्टी ने राम मंदिर निर्माण के चार महीने के भीतर ही अपनी महत्वपूर्ण फैजाबाद सीट खो दी। अमेठी में स्मृति ईरानी का पराजय होना भी उल्लेखनीय है। यूपी में बैठके कम होने की एक वजह है भाजपा की आंतरिक लड़ाई। वहां पर योगी ने बताए हुए उम्मीदवारों को टिकट नहीं दी गई। दूसरी तरफ एमपी, दिल्ली, हिमाचल और उत्तराखंड में भाजपा ने क्लीन स्वीप की है। वो पांच चरणों में जहां मतदान कम हुआ था वहां पे एनडीए ने ५८बैठके गंवाई है।

राहुल गांधी का रायबरेली और वायनाड दोनों बैठकों से जितना भी सूचक है। देखा

२०२४ लोकसभा चुनाव के नतीजे में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाले...

जाए तो इस बार इंडी गठबन्धन ने भी प्रचार में अपनी पूरी जान लगा दी थी और उनके नेताओं एक ही बात कर रहे थे कि हमे २९५ से ज्यादा बैठके मिलेगी उससे कम तो १ बैठक भी नहीं आयेगी, लेकिन उसका उलटा हो गया।

२०१९ के चुनाव के साथ तुलना करे तो एनडीए को करीबन ६१ सीटो का नुक्सान हो रहा है दूसरी तरफ इंडी गठबंधन को ११३ बैठकों का फायदा हुआ है। एनडीए को ४१.७% और इंडी गठबंधन को ३२.५% वोट शेयर मिला है।

लगभग टीवी चैनलो पर सभी एक्जिट पोल में एनडीए को कम से कम ३५० बैठके मिलने का दिखा रहे थे। तो फिर ऐसा क्या हुआ जो एनडीए ३०० का आंकड़ा भी पार नहीं कर सका। उसका मंथन एनडीए को ज़रूर करना चाहिए। ४०० पार की भविष्य वाणी गलत साबित होने से शेर बाज़ार में

> ३०१९ के चुनाव के साथ तुलना करे तो एनडीए को करीबन ६१ सीटो का नुक्सान हो रहा है दूसरी तरफ इंडी गठबंधन को ११३ बैठकों का फायदा हुआ है। एनडीए को ४१.७% और इंडी गठबंधन को ३२.५% वोट शेयर मिला है।

निवेशकों को रोने का समय आया है। ''फिर मोदी'' के सट्टे में बुकिओ मालामाल और पंटरो बेहाल हो गए हैं।

एनडीए के लिए एक अच्छी खबर यह है की उड़ीसा और आंध्र प्रदेश में राज्यों की सरकार बनाने जा रही है और केरल में भी एनडीए ने अपना खाता खोल खोल दिया है।

महाराष्ट्र में देवेन्द्र फड़नवीस को मुख्यमंत्री से हटाकर उपमुख्यमंत्री बनाना भी शायद वहां के परिणाम पर असर डालने वाला एक फैक्टर हो सकता है। ऐसे कई फैक्टर है जो इस चुनाव नतीजे को असर करते थे। एक फेक्टर यह भी है कि पुराने कैंडिडेट को बदलके नए चेहरे पर को चुनाव लड़ाना, सिर्फ़ मोदी के नाम पर। और पूराने सिटिंग कैंडिडेट को विश्वास में लेकर काम न करने का और उस वजह से कुछ नाराज़ उम्मीदवारों की उदासीनता ने भी इस चुनाव के नतीजों

पर असर डाला है। अब एनडीए को इस टर्म में इस चुनाव से कई बातें सीखकर बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। इस चुनाव का असर आनेवाले विधानसभा चुनाव में भी होगा।

अगर एनडीए को ४००+ सीटे मिली तो वो देश का संविधान बदल देगी यह बात लोगों के मन में घुसाने में इंडी गठबन्धन सफ़लता से कर पाई। इस चुनाव से कोंग्रेस को जीवनदान मिला है और वो पहले से और मजबूत हुई है। इस बात का फायदा उसको आनेवाले चुनावो में भी मिल सकता है क्योंकि अब, इस चुनाव के नतीजे से वो और आक्रमक तौर पे प्रचार करेगी यह बात तय है। लेकिन एक बात ये भी सच है कि इंडी गठबंधन को एकजूट बना रहना पड़ेगा क्योंकी एकजुटता ही उसकी ताक़त है। विपक्ष की कोई एक पार्टी अकेले दम पर अभी तो नरेन्द्र मोदी को चैलेंज करे ऐसा नहीं दिखता।

वैसे देखा जाए तो देश की प्रजा ने एनडीए को केन्द्र में सरकार बनाने को स्पष्ट बहुमत दिया है और नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री के रूप में फिर एक बार देखने का तय किया है।

नरेन्द्र मोदी ने इस चुनाव के नतीजे पर प्रथम प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि, ''देश की जनता ने तीसरी बार एनडीए पर भरोसा जताया उसके लिए में आभारी हूं और वंदन करता हूं। यह पल भारत के इतिहास में अभूतपूर्व है और हम नई ऊर्जा, नए उत्साह, नए उमंग और नए संकल्प के साथ हमारा आगे बढ़ेंगे।''

भाजपा मुख्यालय में कार्यकर्ताओं और देश को संबोधित करते हुए नरेन्द्र मोदी ने कहा कि,' आज की जीत भारत के प्रण की जीत है और विश्व के बड़े लोकतंत्र का विजय हैं। १९६२ के बाद किसी सरकार को तीसरी बार सरकार बनाने को मौका मिला है। भारत को बदनाम करने वाली ताकतों को जनता ने आईना दिखाया है। तीसरी टर्म में बड़े फैसले का नया अध्याय लिखेंगे। भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ फेकेंगे और भ्रष्टाचारियों को कड़ी सज़ा दिलाएंगे।

सब ठीक रहा तो एनडीए नरेन्द्र मोदी की अगवाई में केन्द्र में सरकार बनाएगी और नरेन्द्र मोदी फिर तीसरी बार देश के प्रधान मंत्री के रुप में शपथ लेंगे।

पार्टी	2024	वोट%	2019
NDA	292 (-61)	41.7%	353
I.N.D.I.A.	204 (+113)	32.5%	91
तृणमूल कांग्रेस	29 (+6)	4.3%	23
अन्य	18 (-58)	22.3%	76

वैसे देखा जाये तो ईस २०२४ के चुनाव में भाजपा के लिये आंध्रप्रदेश के चंदाबाबु नायडु के साथ गठबंधन मास्टर स्ट्रोक साबित हुआ है...।

विश्व का खतरनाक कुख्यात मेक्सिकन माफिया

जोकविन आर्चीवाल्डो गुजमैन लोएरा

दोस्तों, पिछले अंक में हमने विश्व के खतरनाक कोलंबियन माफिया पाब्लो एस्कोबार के बारे में बताया था। आज हम बात करेंगे विश्व के एक ऐसे ही खतरनाक मेक्सिकन माफिया जोकविन आर्चीवाल्डो गुजमैन लोएरा उर्फ अल चापो उर्फ "JGL" की।

जोकविन आर्चीवाल्डो गुजमैन लोएरा का जन्म ४ अप्रैल, १९५७ को ला टुना, बादीरागुआटो, सिनालोआ, मेक्सिको के ग्रामीण समुदाय के गरीब परिवार में हुआ था। उनके माता-पिता एमिलियो गुजमैन बुस्तीलोस और मारिया कोंसेलो लोएरा पेरेज़ थे। कई पीढियों तक उनका परिवार ला टुना में रहा। उनके माता पिता आधिकारिक तौर पे एक पशुपालक थे, जैसा कि उस क्षेत्र में अधिकांश लोग थे जहां वे पले बढे थे। हालांकि कुछ स्त्रोतों के अनुसार वह एक गोमेरो, एक अफीम पोस्त किसान भी रहा होगा। जोकविन के दो बहेनो और चार भाई थे।

गुजमैन के पालन पोषण के बारे में बहुत ही कम जानने को मिलता है। बचपन में उसने संतरे भी बेचे थे। उसने अपने पिता के साथ काम करने के लिए तीसरी कक्षा में ही स्कूल छोड़ दिया था। उसका स्वभाव आनंदी था और वो मजाक करने में माहिर था इसलिए आसपास के लोग उसे जोकर के नाम से जानते थे। अपने पिता द्वारा बार बार पिटने की वजह से वो कई बार अपनी नानी के घर भाग जाता था। कई बार ऐसा भी हुआ है कि अपने छोटे भाई बहनों को अपने पिता के मार से बचाने के लिए वो खुद उसके सामने खड़ा हो जाता था और बिना वजह का मार खाता था। अपने गांव में

ईन्टरनेशनल माफीया स्टोरी

◆ हसु कपासी-अहमदाबाद ◆

उसने अफ़ीम पोस्त की खेती की और अफ़ीम की खेती की ओर रुख किया जो स्थानीय निवासियों के बीच आम बात है। एक बार जब पौधे किलों में ढेर हो गए तो उनके पिता ने फसल को कुलियाकैन और गुआमुचिल में अन्य आपूर्तिकर्ताओं को बेच दिया, उन्हों ने गुजमैन के साथ रहते हुए क्षेत्र के निकट वानीज्यिक केंद्रों पर मारिजुआना बेचा। उनके पिता अधिकांश मुनाफा शराब और महिलाओं पर खर्च कर देते थे और अक्सर बिना पैसे घर लौटते थे। अपने कुप्रबंधन से तंग आकर गुजमैन ने १५ साल की उम्र में चचेरे भाईयो अल्फ्रेडो,आर्टुरो, कार्लोस, और हेक्टर बेल्ट्रान लेवा के साथ अपने ख़ुद के मारिजुआना बागान की खेती की और उन्हों ने अपने मारीजुआना उत्पादन के साथ अपने परिवार का समर्थन किया।

वो जब किशोरावस्था का था तो उनके पिता ने उन्हे घर से निकाल दिया और वह अपने दादा के साथ रहने चला गया। अपनी किशोरावस्था के दौरान गुजमैन को अपने १.६८ मीटर (५ फीट ६ इंच) कद और गठीले बदन के लिए ''अल चेपो'' उपनाम मिला, जो मेक्सिकन भाषा में ''छोटा'' कहा जाता है। बादीरागुआटो के अधिकांश लोगों ने अपने जीवन के अधिकांश समय सिएरा माद्रे ऑक्सिडेंटल के अफ़ीम के खेतों में काम किया, लेकिन गुजमैन ने अपने चाचा पेड्रो एविलेश पेरेज, जो मेक्सिकन दवा के अग्रदूतों में से एक थे, के माध्यम से बड़े अवसरों की तलाश में अपना गृहनगर छोड़ दिया। बीस साल की उम्र में उसने बदिरागुआटो को छोड़ दिया और संगठित अपराध में सामिल हो गया।

१९८० दशक के दौरान, मेक्सिको में प्रमुख अपराध सिंडिकेट ग्वादलजारा कार्टेल था, जिसका नेतृत्व मिगुएल एंजेल फेलिक्स गैलार्डो (उर्फ 'अल पेड्रिनो' या 'द गॉडफाथर'), राफेल कारोक्वीनटरो, अर्नेस्ट फोंसेका कैरिलो (उर्फ 'डोन') कर रहे थे। १९७० के दशक में गुजमैन ने पहली बार ड्रग लॉर्ड हेक्टर 'अल गुएरो' पाल्मा के लिए विमान द्वारा सिएरा माद्रे क्षेत्र से यूएस - मेक्सिको सीमा के पास शहरी क्षेत्रों में दवाइयों के परिवहन और उनके शिपमेंट की देखरेख करने का काम किया। संगठित अपराध में अपने शुरुआती कदमों के बाद से, गुजमैन महत्वाकांक्षी था और नियमितरूप से अपने वरिष्ठों पर दबाव डालता था की वे उसे सीमा पार तश्करी किए जाने वाले नशीले पदार्थों की हिस्सेदारी बढ़ाने की अनुमति दे। उसने व्यवसाय करते समय हिंसक और गंभीर दृष्टिकोण का भी समर्थन किया; यदि उसकी कोई भी दवा की खेप समय पर नहीं होती, तो गुजमैन तस्कर के सर में गोलीमार के उसे मार डालता। उसके आसपास के लोगों ने सिखा की उसे धोखा देना या दूसरे प्रतिस्पर्धियों के साथ जाना भले ही बेहतर कीमतों की पेशकश करते हों, मूर्खतापूर्ण था।

ग्वाडलाजारा कार्टेल के नेताओं को गुजमैन की व्यवसायिक कुशलता पसन्द आयी और १९८० के दशक की शुरुआत में उन्होनें उनको फेलिक्स गैलार्डो से मिलवाया, जो उस समय मेक्सिको के प्रमुख ड्रग लॉर्डस में से एक था। पहले गुजमैन ने फेलिक्स गैलार्डो के ड्राईवर के रूप में काम किया बाद में उसको लॉजिस्टिक्स का प्रभारी बनाया गया, जहां गुजमैन ने जमीन, आकाश और समंदर के माध्यम से कोलंबिया से मेक्सिको तक दवाई शिपमेंट का समन्वय किया। पाल्मा ने सुनिश्चित किया की डिलीवरी संयुक्त राज्य अमेरिका में पहुंचे। गुजमैन ने पर्याप्त प्रतिष्ठा अर्जित की और सीधे फेलिक्स गैलार्डो के लिए काम करना शुरु कर दिया।

हालांकि, १९८० के दशक के दौरान, ड्रग एनफोर्समेंट एडमिनीस्ट्रेशन (DEA) मेक्सिको में गुप्तरूप से जमीनी कार्य कर रहा था। जहां इसके कई एजेंट मुखबिर के रूप में काम करते थे। एक DEA एजेंट एनरिक केमरेना सालाजार, एक मुखबिर के रूप में काम कर रहा था और फेलिक्स गैलार्डो समेत कई शीर्ष ड्रग बैरन के करीब हो गया। नवंबर, १९८४ में मेक्सिकन सेना ने केमरेना द्वारा प्रदान की गई खुफिया जानकारी पर कारवाई करते हुए गुआडलाजारा कार्टेल के स्वामित्व वाले और ''रेंचो बुफालो'' के नाम से जाने जाते एक बड़े मारीजुआना बागान पर छापा मारा। संदिग्ध विश्वासघात से क्रोधित होकर, फेलिक्स गैलार्डो और उसके लोगों ने बदला लेने के लिए फ़रवरी, १९८५ में केमरेना का अपहरण किया, उसे प्रताड़ित किया और मार डाला। केमरेना की मौत ने वॉशिंग्टन को आग बबूला कर दिया और मेक्सिको ने गिरफ्तारी के लिए बड़े पैमाने पर तलाशी अभियान चलाकर जवाब दिया। गुजमैन ने आंतरिक संकट का फायदा उठाकर कार्टेल के भीतर अपनी पकड़ बनाई और अधिक नशीली दवाओं की तस्करी के संचालन पर कब्जा कर लिया। १९८९ में फेलिक्स गैलार्डो को गिरफ्तार कर लिया

गया; जेल में रहते हुए कई दूतों के माध्यम से, ड्रग माफिया ने गुरेरो के अकापुल्को में एक शिखर सम्मेलन बुलाया। कोंकलेव में, गुजमैन और अन्य ने मेक्सिको के मादक पदार्थों की तस्करी के भविष्य पर मसलत की और ग्वाडलाजारा कार्टेल के स्वामित्व वाले क्षेत्रों को विभाजित करने की सहमति व्यक्त की। पाल्मा और गुजमैन के तहत सिनालोबा कार्टेल का गठन किया गया। गुजमैन विशेष रुप से रेकेट, बाजा केलीफोर्निया राज्यों को अमेरिकी राज्यों एरिजोना से जोड़ते हैं।

जब फेलिक्स गैलार्डो को गिरफ्तार किया गया, तो गुजमैन कथित तौर पे ग्वाडलाजारा, जलिस्को में रहा। हालांकि उनके संचालन का एक दूसरा केन्द्र सीमावर्ती शहर अगुआ प्रिटा, सोनोरा में था, जहां उसने नशीले पदार्थो की तस्करी की गतिविधियों का अधिक बारीकी से समन्वय किया। गुजमैन की विभिन्न हिस्सों में कई संपत्तियां थी। जिन लोगों पर उसने भरोसा किया, उन्हों ने उसके लिए संपतियां खरीदी और गलत नामो से पंजीकृत कराया। गुजमैन के पास पूरे मेक्सिको में कई खेत थे। लेकिन उनमें से अधिकांश सिनालोवा, डूरंगो, चिहुआहुआ और सोनौरा राज्य में स्थित थे। जहां ड्रग लॉर्डस के लिए काम करने वाले स्थानीय लोग अफ़ीम और मारीजुआना की खेती करते थे। पहली बार गुजमैन को अमेरिकी अधिकारियों द्वारा संगठित अपराध में शामिल होने के लिए १९८७ में गिरफ्तार किया गया था। जब कई संरक्षित गवाहों ने अमेरिकी अदालत में गवाही दी थी कि गुजमैन वास्तव में सिनालोआ कार्टेल का नेतृत्व कर रहा था। एरिजोना राज्य में जारी एक अभियोग में आरोप लगाया गया कि गुजमैन १९, अक्टूबर १९८७ से १८, मई १९९० तक २,००० किलोग्राम (४,४०० पाउंड) मारीजुआना और करीबन ४,७०० किलोग्राम (१०,५०० पाउंड) कोकीन की शिपमेंट का समन्वय किया था और करीबन १.५ मिलियन अमेरिकी डॉलर प्राप्त किए थे। नशीली दवाईओ की आय में, जो उसके गृहराज्य में वापिस भेज दी गई थी। एक दुसरे अभियोग में यह आरोप लगाया गया था कि गुजमैन ने तीन साल की अवधि में ३२, ००० किलोग्राम (७०,००० पाउंड) कोकीन और अनिर्दिष्ट मात्रा में मारीजुआना की तस्करी के लिए १,००,००० अमेरिकी डॉलर की कमाई की। नशीली दवाओं के व्यापार में उसने कई बार विमान, परिष्कृत सुरंगों और ट्रेन के जरिए ब्रांडेड मिर्च के डिब्बे का भी उपयोग किया।

१९८९ से १९९३ के बीच गुजमैन को

वो जब किशोरावस्था का था तो उनके पिता ने उन्हे घर से निकाल दिया और वह अपने दादा के साथ रहने चला गया। अपनी किशोरावस्था के दौरान गुजमैन को अपने १.६८ मीटर (५ फीट ६ इंच) कद और गठीले बदन के लिए ''अल चेपो'' उपनाम मिला, जो मेक्सिकन भाषा में ''छोटा'' कहा जाता है।

तिजुआना कार्टेल के साथ कई लड़ाइयां हुई। जिसमें गुजमैन के कई विश्वासु साथियों मारे गए। सामने भी कई लोग मारे गए।

ज्योर्ज रामोस पेरेज के फर्जी नाम से पासपोर्ट बनाने के बाद ४ जून, १९९३ को देश छोड़ने और ग्वाटेमाला में बसने से पहले, गुजमैन को एक विश्वसनीय सहयोगी द्वारा दक्षिणी राज्य चियापास ले जाया गया। उसकी योजना अपनी प्रेमिका मारिया डेल रोसियो डेल विलार बेसेरा और अपने कई अंगरक्षको के साथ ग्वाटेमाला में घूमने और अल साल्वाडोर में बसने की थी। उनकी यात्रा के दौरान मेक्सिकन और ग्वाटेमाला के अधिकारी उनकी गतिविधियां पर नज़र रख रहे थे। गुजमैन ने एक ग्वाटेमाल सैन्य अधिकारी को मेक्सिकन सीमा के दक्षिण में छिपने के लिए १.२ मिलियन अमेरिकी डॉलर का भुगतान किया था। हालांकि, अनाम अधिकारी ने गुजमैन की छिपने की जगह की जानकारी कानून प्रवर्तन को दे दी थी। ९, जून १९९३ को गुजमैन को ग्वाटेमाला

फॉर्ब्स ने गुजमैन को २००९ और २०१३ के बीच दुनिया के सबसे शक्तिशाली लोगों में से एक के रूप में स्थान दिया. जब की ड्रग एनफोर्समेंट एडमिनीस्ट्रेशन ने अनुमान लगाया कि वह पाब्लो एस्कोबार के प्रभाव और संपति से मेल खाता है। उसके पर मेक्सिको ने ३.८ मिलियन यूएस डॉलर और संयुक्त राज्य अमेरिका ने ५मिलियन यूएस डॉलर का इनाम रखा था।

सेना ने ग्वाटेमाला मेक्सिको सीमा के करीब तायचुला के पास एक होटल से गिरफतार किया था और उसे प्रत्यार्पित किया गया था और हत्या और अपराधो को लेकर जेल में बंद दीया था। फिर मेक्सिको में २० साल की सजा सुनाई गई थी। उसने कई जेल प्रहरीयो को रिश्वत दी और २००१ में एक संघीय मास्टर सुरक्षा जेल से भाग गया। भगौड़े के रूप में उसकी स्थिति अनुसार

उसे मेक्सिको और अमरीका से ८.८ मिलियन डॉलर का संयुक्त योगदान मिला था और उन्हें फिर २०१४ में मेक्सिको में गिरफ़्तार कर लिया गया था। वह २०१५ में जेल में बंद सजा सुनाए जाने से पहले जेल में बंद साथियों द्वारा गैंग सुरंग के माध्यम से भाग निकला था। मेक्सिकन अधिकारियों ने ८ जनवरी, २०१६ में तड़के निवास पर छापा मारकर उसको फिर से गिरफ्तार कर लिया गया था। एक साल बाद उसे अमेरिका में प्रत्यर्पित कर दिया गया। २०१९ में उन्हें सिनेलोआ कार्टेल के नेतृत्व के संबधित कई अपराधिक आरोपों का दोषी पाया गया। गुजमैन को १२ फ़रवरी, २०१९को सभी मामलों में दोषी पाया गया। १७ जुलाई, २०१९ को गुजमैन को बिना पैरोल की ३० साल की सजा सुनाई गई और उसकी १२.६ अरब डॉलर से अधिक की संपति की जप्ती का आदेश दीया गया। उनको सबसे सुरक्षित अमेरिकी सुपर मैक्स जेल तहत संघीय रजिस्टर संख्या 89914-053 ADX फ्लोरेंस में कैद किया गया।

दो दो बार मरने के बाद भी ज़िंदा... सुकुमार कुरूप

दोस्तों, हमने कई बार हमारे मेगजीन में अनेको कुख्यात गुनहगारों के बारे में आपको बताया है । आज हम ऐसे ही एक और खतरनाक गुनहगार की बात करेंगे ।

सुकुमार कुरूप केरल के गुनाईत इतिहास का एक दंत कथा समान रामन राघव, बिल्ला - रंगा, चार्ल्स शोभराज जैसा नाम । यह कुरूप ''पुलिस के हाथ बहुत लंबे होते है'' ऐसे बॉलिवुड के डायलॉग के लिए मुंहतोड जवाब हैं ।

चार दशक के उपर के समय का यह पुराना केस केरलवासी अबतक भूल नहीं पाए । १९८४ की २२, जनवरी के दिन कोहरा और ठंड की परवा किए बिना मावेलीकरा पुलिस स्टेशन में सुबह चार बजे एक आदमी पसीने से रेबझेब होता हुआ हाफते हुऐ बोला, ''वहां चावल के खेत में एक कार आग से सुलग रही है और उसकी ड्राइविंग सीट पर कोई है।''

नेशनल काईम स्टोरी

◆ तेज जोषी-राजकोट ◆

आंतरराष्ट्रीय ख्यातिवाले पेंटर राजा रवि वर्मा के जन्मस्थल मावेलीकरा की पुलिस टीम डेप्युटी सुपरिंटेंडेट ऑफ पुलिस पी.एम. हरिदास के नेतृत्व में घटनास्थल पर पहुंच गई। केएलक्यू ७३८१ नंबरप्लेट वाली काली एंबेसेडर कार आग में सुलग गई थी और ड्राईवर की सीट पर एक आदमी आग में पूरी तरह से झुलस गया मिला। पहली नजर में

लगता था कि कार रास्ते पर से गीर जाने की वजह से आग लगी होगी।

लेकिन पुलिस ने बारिकाई से देखा तो कई बातें सामने आई। ड्राईविंग सीट पर बैठा हुआ आदमी बंधे हुए हालत में था। देर रात को नाटक देखने गए लोगों ने लौटते हुए देखा कि कुछ लोग इस कार के पास खड़ी हुई दूसरी कार में भाग रहे थे। झुलसी हुई कार की आसपास माचिस, कुछ दूर पर एक चप्पल की जोड़ी और उसकी थोडी दुरी पर रब्बर के ग्लव्स देखने को मिला, जिस मे एक बाल था। गहरे सांस लेते पेट्रोल की गंध नाक में घुस गई। सर नीचे कर के देखा तो कीचड़ में किसी के कदम दूर जाते दिखाई दिए। हरिदास ने तत्कालीन पुलिस सर्जन को बुलाकर लाश का पोस्टमॉर्टम खेत में ही करवाया। सर्जन के कहने के मुताबिक़ यह मौत आकस्मिक नहीं था,(जो पुलिस भी समझ रही थी) कत्ल था। अब यह स्पष्ट हो गया था कि कार की सीट में बैठाने से पहले ही इस आदमी की हत्या की गई थी। इसलिए उसके श्वसन तंत्र में कोयले या राख का अस्तित्व नहीं था। यह बात सूचक थी कि मरने वाले आदमी के पेट में एल्कोहोल के अंश मिले थे।

थोड़े ही घंटो में मरने वाले आदमी की पहचान हो गई। उसका नाम था सुकुमार कुरूप जो पास में ही चेट्टीनाड का रहनेवाला था। वो थोड़े समय पहले ही अखात के देशों से वापिस आया था। उसके संबंधी रोते हुए आए, लेकिन उसका चेहरा पहचानना मुश्किल था। चचेरे भाई भास्कर पिल्लाई ने कद बदन से सुकुमार को पहचान लिया। भास्कर रोते हुए बोला कि दो दिन पहले शहर जाने को निकला सुकुमार अभी तक वापिस नहीं आया था। पुलिस ने सुकुमार के पार्थिव शरीर को परिवार जनों को इस शर्त पर सोंपा कि उसका अग्निसंस्कार न करके उसको दफनाया जाए।

लेकिन दो -दो बार मरने के बाद भी ज़िंदा रहनेवाला सुकुमार कुरूप आज भी पुलिस के बहुत ही प्रयासो के बाद भी गिरफ्त में नहीं आया हैं। अगर वो आज जिंदा होगा तो ७७ साल का होगा।

लेकिन असल बात तो यह थी कि जिसके आगे स्वर्गवासी लग गया था वो सुकुमार कुरूप ११५ कि.मि. दूर आलुवा की लॉज में जिंदा था। बाद में पुलिस को जानकारी मिली कि कार में मिली आग में झुलसी हुई लाश अल पूझा के चाको की थी, जो बिना कुसुर निर्दोष मारा गया था।

सुकुमार कुरूप का असली नाम गोपालकृष्ण कुरूप था। उसका जन्म चेट्टीनाड के उच्च कुल के मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। बचपन से ही वो अलग स्वभाव का था, एकदम ही शैतानी दिमाग वाला। बारवीं कक्षा में वो उत्तीर्ण होने के बाद वो इन्डियन आर्मी में एरमैन के रूप में शामिल हुआ, उधर उसको काम में अनुकूलता न आने से वो लंबी छुट्टियां लेकर घर आ गया, बाद में नौकरी पर आर्मी में गया ही नहीं। इसलिए एयरफोर्स में 'डेजर्टर' यानि कि 'भागेडु' जाहिर हुआ। इसका सीधा मतलब होता है जब भी गिरफतार होता है तो उसको कानूनी कार्रवाई का सामना करना पड़ेगा और उसको सजा भी हो सकती है।

इस डर की वजह से उसके मन में शैतानी ख्यालों आने लगे। स्पेशियल ब्रांच के एक हेड कांस्टेबल को रिश्वत दे के एयरफोर्स को नकली रिर्पोट भेजने की योजना बनाई की 'भागेडु' गोपालकृष्ण की मौत हो गई है और इस तरह से एयरफोर्स में फाइल बंद करवाई। साथ ही पुराने नाम को छोड़कर दूसरा नया नाम अपनाया, सुकुमार पिल्लाई। इस नाम से फर्जी पासपोर्ट बनवा के अखात के देश में पलायन हो जाने की योजना बनाई। मुम्बई में माटुंगा स्थित मंदिर में पुरानी प्रेमिका सरसम्मा के साथ शादी कर के अबूधाबी चला गया।

वो अबूधाबी में एक मरीन कंपनी में शांति से दिन बिताता था। अब निष्चित आय और कोई टेंशन ना होने से वो फिर गलत रास्तों पर जाने लगा। उसके पैसों से मोज करने वाले दोस्तों की संख्या बढ़ती जा रही थी। वो पार्टीओ में दोस्तों के पिछे पैसा उड़ाता था और दोस्तों को आर्थिक तौर पे मदद करने के लिए हमेशा तैयार रहता था। इन दोस्तो में एक दोस्त था शाहू। वो दोस्त कम सह कर्मचारी था, जो सुकुमार के भावि जीवन में महत्वपूर्ण रोल निभानेवाला था।

छुट्टियों में बहुत ही मात्रा में शराब पीना और दोस्तो को भी पिलाता था। अंबालापुर में एक प्लॉट की खरीदारी की और उस पर बड़ा बंगला बनाया, एंबेसेडर कार भी खरीदी।

इन सब बातों का असर उनके बैंक बैलेंस

पर पड़ा। पति-पत्नी दोनों मिलकर महिने ६०,००० कमाते थे। लेकिन बचता कुछ नहीं। इस में भी ऐसी खबर आई की कंपनी कुछ लोगो की छुट्टी करनेवाली है। दोस्तों ने सुझाव दिया कि निश्चित आय से कुछ ऐसा व्यापार करना चाहिए जो अच्छा मुनाफा दे। लेकिन व्यापार शुरू करने के लिए पैसा कहां से लाए ?

एक रात को कुरूप ने शाहू को एक योजना बताई और दोनों तूरंत ही केरल आए। कुरूप ने शाहू के अलावा अपने चचेरे भाई भास्कर पिल्लाई को भी ये योजना में शामिल किया। पिल्लाई ने पुरानी अम्बेसेडर कार खरीदी। पहले ऐसी योजना बनाई थी कि किसी अनजान आदमी की लाश को कुरूप की लाश बताकर बीमा की बड़ी राशि को हांसिल करना। लेकिन यह बात मुश्किल लगने से कुरूप जेसे दिखने वाले आदमी की तलाश शुरु कर दी। अब यह तीन बदमाशों के साथ चौथा पोनप्पन शामिल हुआ। हाईवे पर तलाश की, शराब पिया लेकिन शिकार नहीं मिला, बाद में दो अंबेसेडर लेकर वे लोग शिकार की तलाश में निकल पड़े।

हरिपाल में हरी सिनेमाघर के बाहर चाको नामका एक युवां लिफ्ट मिलने की राह में खड़ा था। उसको अंदर बिठाकर पिल्लाई ने चाको को ब्रांडी का ग्लास ऑफर किया। पहले चाको ने मना बोला फिर दूसरी बार जब गुस्से में उसको पूछा तो डर के मारे चाको निंद की गोलीवाली ब्रांडी एक ही घूंट में पी गया। चाको थोड़ी देर में ही मूर्छित हो गया तब तोलिए से उसका गला घोंट कर उसकी हत्या कर दी। बाद में उसका चेहरा बिगाड़ दिया की कोई उसको पहचान न सके। आख़िर में चावल के खेत में वो आग वाला लास्ट काम भी कर दिया।

पुलिस की सावधानी और कुशलता से निर्दोष आदमी को मार कर बीमा की बड़ी राशि हासिल करने का प्रयास निष्फल हो गया। तीन गुनहगारों को गिरफ्त में लिया गया और उन्हों ने अपनी सजा भी भुगत ली।

लेकिन दो -दो बार मरने के बाद भी ज़िंदा रहनेवाला सुकुमार कुरूप आज भी पुलिस के बहुत ही प्रयासो के बाद भी गिरफ्त में नहीं आया हैं। अगर वो आज जिंदा होगा तो ७७ साल का होगा। लेकिन भागेडू गुनहगार के रूप में केरल आज भी उसे भुला नहीं है। कुरूप पर कई नाटक और फिल्म भी बन चुकी है और नवल कथाएं भी लिखी जा चुकी है।

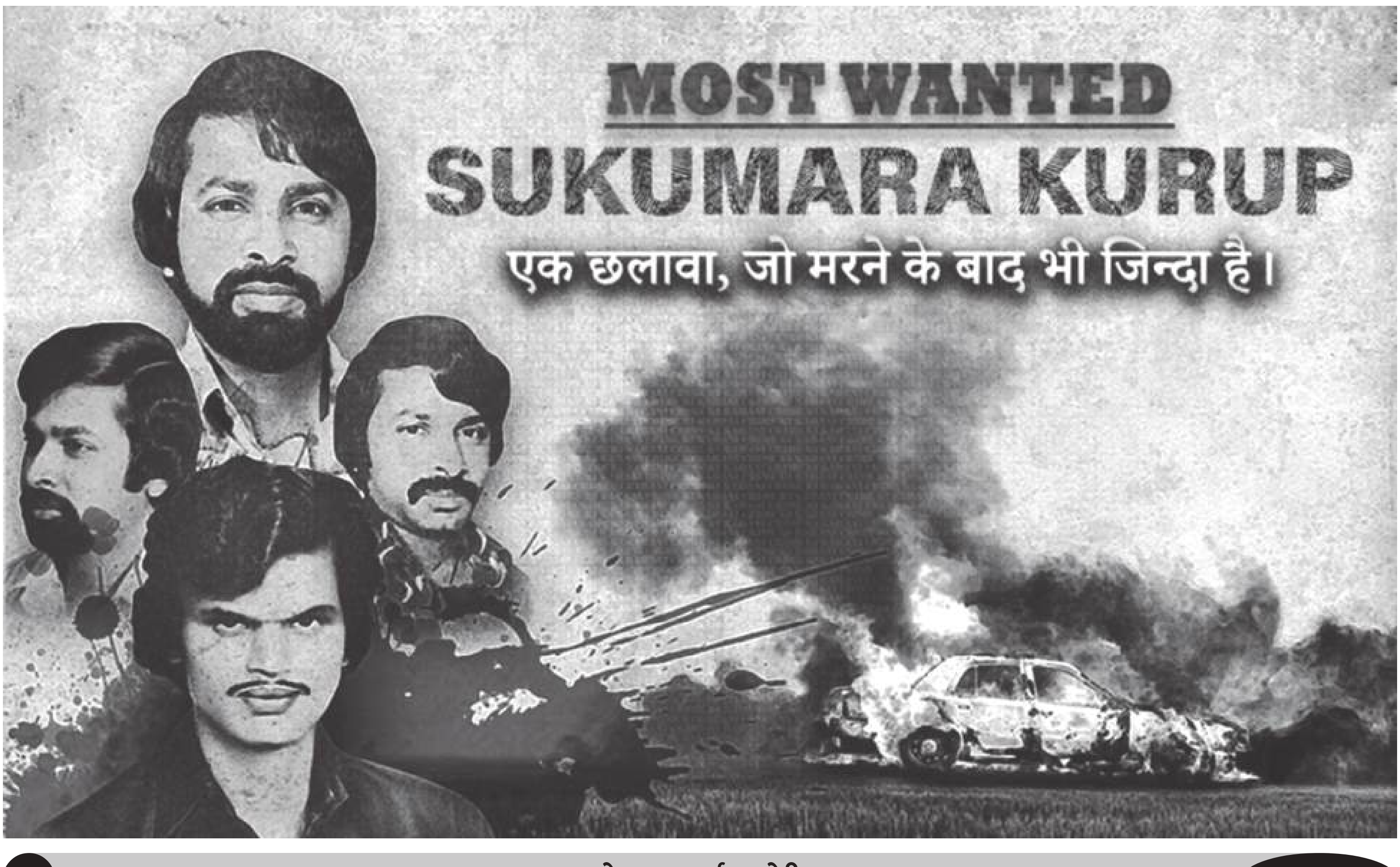

पूरे विश्व में म्यानमार को बदनाम करनेवाला मेथ एम्फेटेमाइन

वैसे तो हमारे देश की पूर्व सरहद के पास आया हुआ देश म्यानमार (पुराना बर्मा) का गुजरात के साथ पुराना नाता रहा है। म्यानमार में जन्मे हुए और बाद में स्थलांतरित होकर गुजरात में आके स्थाई हो गए कई हिंदु – मुस्लिम परिवार आपको देखने को मिलते है। गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रुपाणी का जन्म भी म्यानमार में ही हुआ था। ऐसे ही दिवंगत अहेमद पटेल के पत्नी मेमुनाबेन का जन्म म्यानमार के मांडले शहर में हुआ था। सुरत के रांदेर क्षेत्र में बसे हुए कई मुस्लिम परिवारो का नाता म्यानमार के साथ रहा है। वैसे तो पीछले कई दशकों से म्यानमार कई वजहो से बदनाम होता रहा है। लश्करी शासन के समय में प्रजा पर कई अत्याचार किए गए थे, जिसमें प्रजा को बहुत यातनाएं भुगतनी पड़ी थी। विविध गुट के स्थानिक निवासियो के बीच कई सालों तक गृह युद्ध हुआ था। वंशीय कत्ले आम की वजह से भी म्यानमार बदनाम हुआ था।, लेकिन हाल में जिस वजह से म्यानमार बदनाम है वो वजह अलग ही है।

दोस्तों, आज हम बात करेंगे एक ऐसे खतरनाक नार्कोटिक ड्रग की जिस की वजह से हाल के समय में म्यानमार पूरी दुनियां में बदनाम हुआ है।

म्यानमार की अभी की बदनामी की वजह है, 'मेथ एम्फेटेमाइन' उर्फ 'मेथ' या 'या बा' के नामसे जाने जाते एक खतरनाक नारकोटिक ड्रग। कोकीन नाम के नार्कोटिक ड्रग का ८०% हिस्सा मेक्सिको या कोलंबिया जैसे लेटीन अमेरिका के देशो द्वारा तैयार कर के पूरे विश्व में पहुंचाते है।

ड्रग दास्तान...

◆ विजय साणथरा ◆

इसी तरह म्यानमार द्वारा पूरी दुनिया में खतरनाक ड्रग 'मेथ एम्फेटेमाइन' सप्लाय होता है। लोग कोकीन की तस्करी के लिए लेटिन अमेरिका के देशों के बारे में बहुत सारी बातें जानते हैं, लेकिन पूरी दुनियां के युवांओ को 'मेथ' के आदि बनानेवाला म्यानमार है इसकी जानकारी बहुत ही कम लोगों को होगी।

विविध रसायनों से लेबोरेटरी में बनाया जाता 'मेथ एम्फेटेमाइन' कोकीन जीतना ही खतरनाक है। 'मेथ' सफेद क्रिस्टल जैसे केमिकल से बनता है, उसके बाद उसमें से पिंक कलर की गोलियां बनाई जाती है। असल में इस केमिकल का उपयोग ज़ुकाम की वजह से बंद हो गए नाक को खोलने के लिए बने इन्हेलर बनाने में होता था, जो बीसवीं सदी में शुरू हुआ था। इस दवाई से मूड़ अचानक से अच्छा हो जाता है, भूख मिट जाती है, दिमाग के ज्ञानतंतुओ जरुरत से

ज्यादा सक्रिय हो जाते है। उसका सेवन करनेवाली व्यक्ति बहुत बोलने लगती हैं। 'मेथ' की हमारे दिमाग में रही सेंट्रल नर्वस सिस्टम पर बहुत ही बूरी असर पड़ती है। अमेरिका की ड्रग एनफोर्समेंट एजेन्सी ने 'मेथ एम्फेटेमाइन' को शेड्यूल-२ तले रखा होने से ये वैध रूप से बेचा नहीं जाता। कुछ देशों में इस ड्रग का उपयोग चंचलता कम करने और वजन कम करने के लिए किया जाता है।

थाईलैंड में इस ड्रग को 'या बा' तरीके से जाना जाता है। जिसका मतलब होता है 'गांडी दवाई'। दूसरी दवाइयां के जैसे ही ये भी मुंह से ली जाती है। कुछ व्यसनियो 'मेथ' की टेबलेट को एल्युमीनियम फॉइल पर रखकर नीचे से गर्मी दे कर उसका धुआं अपने श्वास मे लेते हैं। तो कुछ आदतियों इस टेबलेट का चूर्ण बना के कोकीन के जैसे नाक द्वारा शरीर में खींचते हैं।

करीबन एक सदी पहले म्यानमार में अफ़ीम का उत्पादन अफगानिस्तान के बाद दूसरे नंबर पर होता था। म्यानमार में ड्रग माफियाओ थाइलैंड और लाओस की सरहद से अफीम में से बनते ब्राउन शुगर जैसे नारकोटिक्स पदार्थो पूरी दुनियां में फैलाने का काम करते थे, उस समय म्यानमार में लश्करी शासन था। खुद लश्करी अफसरों ही अफ़ीम की तस्करी के साथ जुड़े हुए थे। सेना के अलावा म्यानमार में लड़ते अलग अलग स्थानिक हथियार वाले माफियाओ भी खुल्लमखुल्ला रूप से अफ़ीम की तस्करी करते थे। आखिरकार अमेरिका के दबाव की वजह से म्यानमार की सेना को जाहिर में होती नारकोटिक्स ड्रग की तस्करी रोकने के लिए कदम उठाने पड़े थे। उस समय अफ़ीम वाले सेंकड़ों एकर खेतों का खात्मा किया गया था। लेकिन थोड़े समय बाद ही म्यानमार के माफियाओं ने 'मेथ एम्फेटेमाइन' का उत्पादन शुरू कर दिया था और उसका नं.१ सप्लायर भी बन गया।

चीन और कुछ स्थानिक म्यानमार वासीओ ने एक गैंग बनाई है, जिसका नाम है, 'शामगोर'। इस गैंग के लीडरों द्वारा म्यानमार में 'मेथ' का उत्पादन और सप्लाय का ज्यादातर काम होता है। इस गैंग इस अवैध ड्रग के व्यापार में से सालाना ८०० करोड़ से ज्यादा अमेरिकन डॉलर की कमाई करती है। इस ग्रुप का लीडर है, से ची लोक नामका गैंगस्टर, जो चीन में जन्मा भी हुआ है। इस गैंग का नेटवर्क होंगकांग में भी है। 'मेथ एम्फेटेमाइन' का जब से ज्यादा उत्पादन म्यानमार के 'द गोल्डन ट्रायंगल' नामसे जाने जाते क्षेत्र में होता है। थाईलैंड, लाओस और म्यानमार के जुड़ती सरहदो के पास आया हुआ इस क्षेत्र ज्यादातर पर्वतो और नदियों का क्षेत्र है। थोड़े सालों पहले इस क्षेत्र में अफ़ीम का सबसे ज्यादा उत्पादन होता था।

उत्तर म्यानमार सरहद पर आया शान नाम का राज्य भी 'मेथ' का उत्पादन करने के लिए कुख्यात है। इस राज्य अपने को म्यानमार के शासकों से अलग करना चाहता है। इस वजह से उसने अपनी निजी सेना भी बनाई है और इस सेना से वो म्यानमार के शासकों की सेना से बार बार लड़ाइयां भी लड़ते हैं। इस राज्य में भी कई आंतरिक गुट सक्रिय है और वे सब बार बार एक दूसरे के साथ लड़ते रहते है। इन शान राज्य में चावल और ताजे फलों का मबलक उत्पादन होता है, लेकिन 'मेथ एम्फेटमाइन' के काले धंधे में मातबर कमाई होने की वजह से यहां के लोग चावल और ताजे फलों की खेती करने के बजाय इस काले धंधे में ज्यादा कार्यरत रहते है। दूसरी बात यह है कि म्यानमार के शासकों के साथ लड़ने के लिए उनको शस्त्रों की आवश्यकता रहती है, जो इस काले धंधे की कमाई से आराम से पूरी हो सकती है।

वर्तमान समय में देखे तो अमेरिका और यूरोप के देशों में कोकीन से ज्यादा 'मेथ' के व्यसनियों बहुत ही मात्रा में बढ़ गए हैं। छोटी दवाइयां की गोली जैसे आकार की वजह से 'मेथ' की हेराफेरी आसानी से हो सकती है। म्यानमार में कोई भी शासक आए लेकिन वहां पर सेना बहुत ही ताकतवर है। म्यानमार की सेना के ज्यादातर अफसरों भ्रष्ट है। ड्रग के बारे में अमेरिका जिस सरलता से लेटिन अमेरिका के देशों पर दबाव बना सकता है इस सरलता से वो म्यानमार पर दबाव नहीं बना सकता। यहां पर हर एक राज्य में अलग अलग स्थानीय वंशिय गुटो अपने वर्चस्व के लिए हमेशा अंदर ही अंदर एक दूसरे के सामने लड़ते रहते हैं। चीन द्वारा इन सबको शस्त्रों दीया जाता है और वह चाहता है कि म्यानमार से कभी भी 'मेथ एम्फेटेमाइन' का उत्पादन बंद ना हो क्योंकि चीन को तो अपने शस्त्रों बेचना है फिर म्यानमार का जो होना है वो होगा। उसकी परवा भला वो क्यूं करे ? उसे तो अपने शस्त्रों बेचने से मतलब है।

चीन के इस रवैये और विश्व के युवांओ को लगी हुई आदत से नजदीक के समय में तो म्यानमार से 'मेथ एम्फेटेमाइन' की तस्करी बंद हो जाए ऐसा लगता नहीं है।

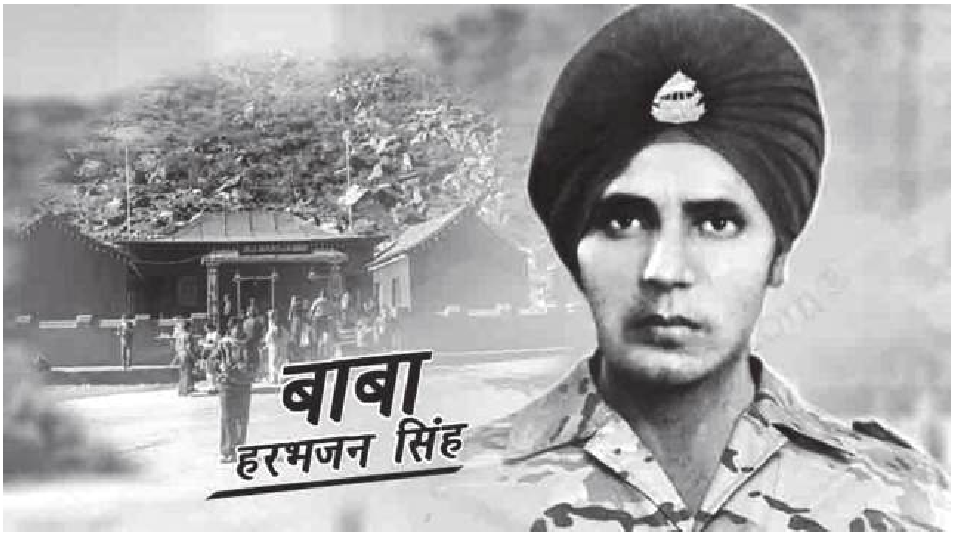

मौत के बाद भी ड्युटी निभाता फौजी

हरभनसिंह ब्रसाई

हमने कई बार हमारे सेना के जांबाज अफसरों और वीर जवानो के बारे में विस्तृत रूप से बताया हैं।

आज हम बात करेंगे हमारी सेना के ऐसे वीर जवान की जो अपनी मौत के बाद भी अभी भी अपनी ड्युटी बजा रहा है। इस जवान का नाम है, हरभजन सिंह ब्रसाई। उनका जन्म ३० अगस्त, १९४६ को पाकिस्तान के गुजरांवाला जिल्ले के छोटे से गांव सदराना में हुआ था। २० साल की उम्र में हरभजन सिंह ९, फरवरी १९६६ को भारतीय सेना के पंजाब रेजीमेंट में सिपाही के रूप में शामिल हुए थे। महज़ दो साल बाद ४, अक्टूबर १९६८ को एक हादसे में उनकी मौत हो गई।

इस घटना के वक्त उनकी ड्युटी पंजाब रेजीमेंट के साथ पूर्वी सिक्कीम में थी। उस दिन हरभजन सिंह घोड़ों के एक काफ़िले को तु कुला से डोंगचुई ला ले जा रहे थे, तभी अचानक नाथुला के समीप उनका पैर फीसल गया और नज़दीकी नाले में जा गिरे। नाले में पानी का बहाव हरभजन सिंह के शरीर को घटना स्थल से दो कि.मि. दूर तक ले गया। जब वे तीन दिनों तक नहीं मिले तो सेना ने उन्हें भगौड़ा घोषित कर दिया था।

हरभजन सिंह की मौत के बाद कुछ ऐसे अजीबो गरीब घटना क्रम हुऐ जिसकी वजह से वह धीरे धीरे मशहूर होने लगे। कहा जाता है कि हरभजन सिंह मृत्यु के बाद अपने एक साथी के स्वप्न में आए और अपने गुम हुए शरीर के बारे में बताया। आश्चर्य की बात है कि भारतीय सेना को तीन दिनों की खोजबीन के बाद उसी जगह पर उनका शव मिला। यही नहीं, ये भी कहा जाता है कि हरभजन सिंह ने अपने साथी के स्वप्न में आकर अपना समाधि

अनसंग हिरो

◆ सतीष सोलंकी-राजकोट ◆

स्थल बनाने का भी अनुरोध किया। इसके बाद यूनिट ने जेलेप दर्रे और नाथुला दर्रे के बीच १४००० फीट ऊंचाई पर उनकी समाधि का निर्माण किया।

बाद में हरभजन सिंह के समाधि स्थल पर ही उनका मंदिर स्थापित कर दिया। हरभजन सिंह का मंदिर सिक्किम की राजधानी गंगटोक के पास हैं। यहां से उसे बाबा हरभजन सिंह का दर्जा दिया गया। कहा जाता है कि यहां सिर्फ़ भारतीय सेना ही नहीं चीनी सेना के जवान भी उनके सम्मान में शीश झुकाते है। आर्मी द्वारा उनकी तनख्वा हर महीने उनके घर भेजी जाती है। आर्मी के को कैंडिडेट उनका सामान छुट्टी पर उनके साथ घर पर भेज देते है।

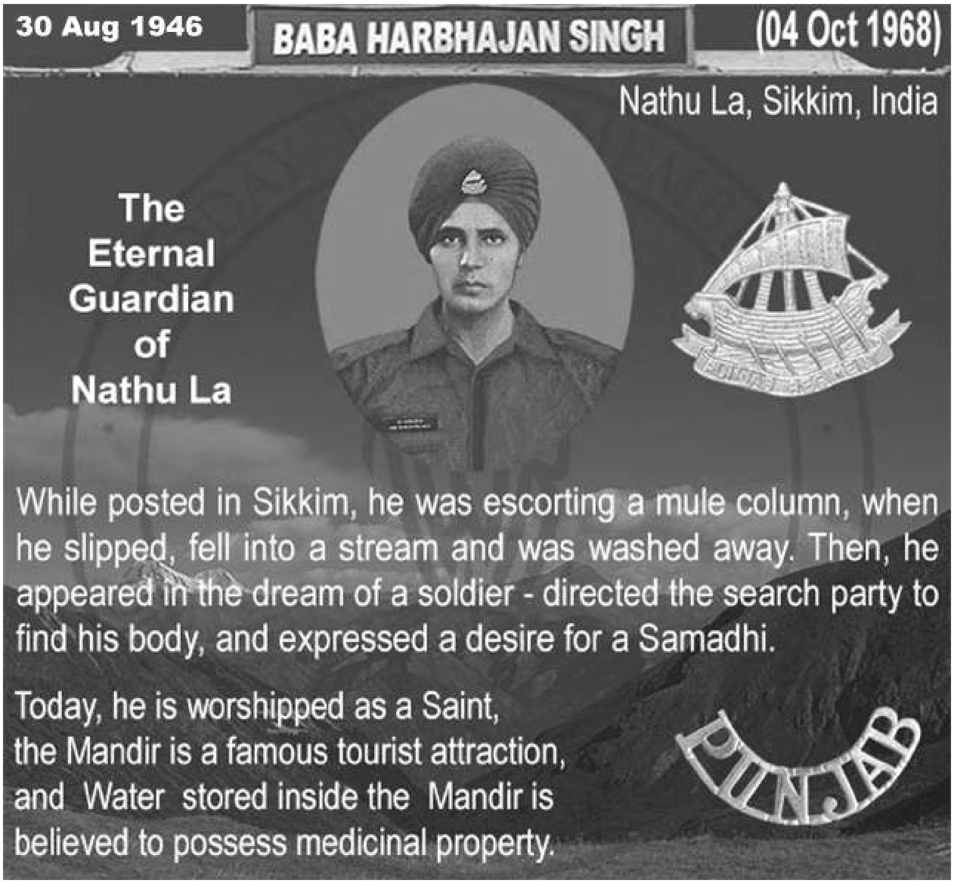

बाबा हरभजन सिंह का मंदिर भक्तों के लिए एक प्रमुख धार्मिक स्थल है, यहां पर आने वाले लॉग अपनी मनोकामनाओं को पूरा करने के लिए प्रार्थना करते है और बाबा हरभजन सिंह की आत्मा को श्रद्धांजलि देते है। प्रति वर्ष ४, अक्टूबर को उनकी पुण्यतिथि पर मंदिर में विशेष कार्यक्रम होते हैं। ये दिन उनकी याद में विशेष रूप से मनाया जाता है। इस दिन उनके मंदिर में भजन कीर्तन और धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

सेना के जवान बाबा हरभजन सिंह के मंदिर की रखवाली करते है। मंदिर में हरभजन सिंह की मूर्ति, जूते, आर्मीड्रेस, टोपी, बिस्तर और दुसरे सामान रखे हुए है। यहां हर दिन उनके जुतों को पॉलिश भी की जाती है। मंदिर के बाहर एक बोर्ड लगा हुआ है जिसमें बताया गया है कि मान्यताओ के अनुसार मंदिर में जल चढ़ाने के बाद उसे पी लेने से बीमार आदमी ठिक हो जाता है। इसलिए भक्त यहां बोतल में पानी लाकर रखते हैं और फिर उसे लेकर घर चले जाते हैं।

ऐसी भी मान्यता है कि बाबा हरभजन सिंह आज भी भारतीय सेना में अपनी ड्यूटी निभा रहे है। वे आज भी सरहद पार चीन की तमाम गतिविधियों की जानकारी अपने साथियों को स्वप्न में आकर देते हैं। जब भी कोई जवान की सरहद पर पहरा देते समय नींद की वजह सेआंख लग जाती है तब उनको हवा से चांटे भी पड़ते है, मानो की कोई उसे नींद से जगा रहा है।

प्रति वर्ष ४, अक्टूबर को उनकी पुण्यतिथि पर मंदिर में विशेष कार्यक्रम होते हैं। ये दिन उनकी याद में विशेष रूप से मनाया जाता है। इस दिन उनके मंदिर में भजन कीर्तन और धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

સોની જયંતિલાલ નરશીદાસ ®

કતારગામ, સુરત । ઢસા

એજ નામ... એજ વિશ્વાસ સાથે... સુરત શહેરમાં....

OPENING ON 07/07/2024 @ Katargam, Surat

SINCE - 1961

જયંતિલાલ નરશીદાસ

(ઢસા વાળા) જવેલર્સ

પેઢીઓનું પરંપરાગત જવેલર્સ

SONI JAYANTILAL NARSHIDAS ®

SINCE - 1961

શૈલેષભાઈ 94263 43199
હેનીલભાઈ 95370 33199
માહિરભાઈ 94262 63199

A-36, ઈશ્વરનગર, વેડ રોડ,
સિંગણપુર ચાર રસ્તા, કતારગામ, સુરત.

મેઈન બજાર,
ઢસા, જી. બોટાદ.

9773110033 j.n.soni_dhasa
sonijayantilal3199@gmail.com

Customer Setisfaction is Our Motto

Rose

SPA & WELLNESS

Well Trained & Humble Staff

- Dry Therapy
- Oil Therapy
- Cream Therapy
- Scrub Therapy
- Gel Therapy

3rd Floor,
Shree Ram Complex,
Bapa Sitaram Chowk,
Raiya Road,
Rajkot-360007

Contact No.63 5 63 555 63

EICHER

TRUCKS AND BUSES
AUTHORIZED DEALER

Ashokbhai Dhanjibhai Makwana - Mobile : +91 99247 69400

જૂનાગઢ શહેરમાં આવેલ આઈશર કંપનીનો અદ્યતન શો-રૂમ

આઈશરનાં તમામ મોડેલના વાહનનું રીપેરીંગ કામ કરી આપવામાં આવે છે.

એક્સિડન્ટ થયેલા વાહનોનું પણ કામ પણ કમ્પ્લિટ કરી આપવામાં આવે છે.

અમારૂ વિમા કંપની સાથે પણ ટાઈઅપ છે.

વાહનોની ટોટલ સર્વિસ કમ્પ્લિટ કરી આપશું.

નવા વાહનોના સેલ્સ તથા સ્પેર્સ અવેલેબલ છે.

24x7 on Road કામ કરી આપીએ છીએ.

આઈસર કંપનીના ઓથોરાઈઝ ડિલર - એપ્કો ઓટો સેલ્સ પ્રા. લી.

Apco Autosales Pvt. Ltd.
Alpha Vidhaya Sankul, Rajkot Highway,
Vill - Vadal. Junagadh-362 001
e-mail: apcojunagarh@agc.co.in

CELL METRO

Rohitbhai Maheta
Mo. +91-9033037325
Mo. +91-7567321695

Cell Metro
Service Center

Hardware And Software Solution
Touch And Combo Change
All Mobile Problem Solution

Can You Want to Change Your Bracked Mobile Display ?

Touchpad or Glass We Change by Latest Machine

- Water Damaged
- Charging Problem
- Speaker Problem
- Mike Problem
- Network Problem
- Shoftware Problem

Immigiate

We will Repair Your Mobile Phone at Fare Rates Within 30 Minutes

Limda Chowk, In Front of Panchnath Mahadev Temple, Rajkot.

क्या २०३० तक देश के ४०% लोगों को पीने का पानी नहीं मिलेगा ?

ग्लोबल वोर्मिंग

◆ शितल परमार-राजकोट ◆

आज के आधुनिक युग में पूरे विश्व में नए नए आविष्कार मानवी की सवलतो के लिए होते रहते हैं। विश्व की आबादी में तेजी से इजाफा हो रहा है। दूसरी तरफ देखें तो विश्व में जमीन मर्यादित स्थिति में है। बढ़ती आबाढी की वजह से मानवी अपने रहने के लिए हरा भरा जंगल को काटता जा रहा है और समंदर में भी उसको डकार कर के वहां पर भी अतिक्रमण कर रहा है। ये सब प्रकृति के खिलाफ है। मानवी के ऐसे कदमों से वो ख़ुद अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने की स्थिति पैदा करता है। क्योंकि इससे सुनामी, धरती कंप, तूफान, जंगलों में बार बार आग लगना जैसी कई प्राकृतिक आपदा आती है और बड़े पैमाने पर जान हानि और अब्जो रुपए का नुकसान होता है। वातावरण में फ़र्क आ जाता है, बिना मौसम के बारीश होना, पहले जहा बारिश नहीं होती थी, अब वहां पर नदियों का पूर आने लगा है। पूरे विश्व में सरेराश तापमान में वृद्धि हुई है। विश्व में और हमारे देश के कई राज्यों के शहरों में वातावरण में जरूरत से ज्यादा मात्रा मे कार्बन डायोक्साइड पाया गया है और इस वजह से वहां के लोगों को सांस लेने में बहुत ही तकलीफ होती है। लोग सांसों की बीमारियों से परेशान हो रहे हैं। वायुप्रदूषण के साथ साथ जलप्रदूषण भी बढ़ गया है। लाखों की संख्या में जलचर प्राणियों की भयावह तरीके से मौत होती है। पशु पक्षीयो की कई प्रजातियां विलुप्त हो गई है और कई प्रजातियां विलुप्त होने की कगार पर है।

पूरे विश्व में नदी, नाला, तालाब सूखने लगे हैं। हाल ही में हमारे देश के नीति आयोग का जो रिपोर्ट आया है उसके मुताबिक़ २०३० की साल तक हमारे देश के ४०% लोगों को पीने का पानी नहीं मिलेगा!

हमारे देश में ७० साल पहले ३० लाख कुआं और तालाब थे, १० साल पहले १५ हजार नदियां थी लेकिन अब ४५०० नदियां सूख गई है, २० लाख कुआं, तालाब और सरोवर नष्ट हो गए हैं। ग्राउंड वॉटर के हालात बहुत बुरे है। देश में अनेकों जगह पर ४० मीटर तक ग्राउंड वॉटर लेवल नीचे आ गया है। इसी वजह से अब पानी की तीव्र कमी सामने आयेगी।

जलपुरुष के नामसे प्रचलित और मेग्सेस एवोर्ड पानेवाले राजेन्द्र सिंह के कहने मुताबिक़ देश में १० साल पहले करीबन १५ हजार नदियां थी। इस दौरान ४५०० जितनी नदियां सूख चुकी है, जो सिर्फ बारिश के टाइम ही बहती है। वो आगे बताते हुए कहते है कि थोड़े समय

पहले उनकी टीम ने सर्वे किया था, जिससे ये बात सामने आई कि, स्वतन्त्रता से ले के अबतक हमारे देश में २/३ तालाब, कुआं, सरोवर और झरने ख़त्म हो गए हैं। स्वतन्त्रता के समय देश में ६ लाख गांव थे, यहां पर हर एक गांव में एवरेज ५ जल संरचनाएं थी। मतलब के पूरे देश में ३० लाख। इतने सालों में २० लाख जल संरचनाएं पूर्ण रूप से सूख गई है। हमारे देश में जल स्तर हर साल ३ मीटर नीचे जा रहा है।

हमारे देश में सब से ज्यादा भूगर्भ जल स्तर नीचे जाने वाले राज्यो के आंकड़े:

राजस्थान-२०% स्थल, हरियाणा-२०% स्थल, गुजरात-१२% से ज्यादा, चंडीगढ़-२२% से ज्यादा, मध्यप्रदेश-४% से ज्यादा (यहां पर ४० मीटर या उससे ज्यादा)।

टॉप ५ देशों में पीने के पानी से दूर लोगों की संख्या :

भारत-१६.३ %, इथोपिया-६.१ %, नाइजीरिया-५.९ %, चीन-५.८% और कोंगो-४.७%

अब हम जानते हैं कि हमारे देश में कुछ राज्यों की पानी की स्थिति कैसी है।

राजस्थान : शहरी इलाकों में तालाब और कुएं की संख्या ७७२ है, जिसमे से ४४३ में पानी है; जब की दूसरे ३२९ कुएं, तालाब सूख गए हैं या तो उस पर मत्स्य निर्देशालय अवैध तरीके से पेशकदमी हो गई है। राजस्थान में मुख्यत: ११ मुख्य नदियां है, जिसके पानी का उपयोग पीने के लिए और खेतों में सिंचाई के लिए किया जाता है। जिसमें से बड़ी मात्रा में नदियां बरसात के पानी के बहाव की है, जो सिर्फ बरसात की मौसम में ही बहती है, बाढ में सूख जाती है।

सुखा पडा हेन्ड पंप

उत्तरप्रदेश: यूपी में १ लाख ७७००० कुआं है। जिसमें से पिछले सिर्फ पांच सालों में ७७००० कुआं कम हो गए हैं। सिंचाई विभाग के आंकड़े मुताबिक़ तालाब और सरोवर की संख्या २४,३५४ है। २३,५०९ तालाब सरोवर पानी से भरे है, बाकी रहे १०४५ तालाब पिछले ५ सालों में कम हो गए हैं।

बिहार: जन स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग के कहने के मुताबिक ४.५ लाख हैंडपंप सुख गए हैं। ८३८६ में से १८७६ पंचायतों में जमीन का जल स्तर नीचे जा चुका है। बिहार सरकार के मत्स्य निर्देशालय के मुताबिक़ २० साल पहले राज्य में सरकारी निजी तालाबों की संख्या २.५ लाख थी, वो अब कम होकर ९८,४०१ हो गई है। यहां छोटी बड़ी १५० नदियां थी, लेकिन इसमें से ४८ नदियां सूख गई है।

हमारे देश में पानी का सबसे ज्यादा उपयोग खेती में होता है, ७६%। ७% पानी का उपयोग उद्योगों में और ६% दूसरे उपयोग में लिया जाता है। लोगों द्वारा पानी का उपयोग ११% होता है। हमारा ७०% पानी दूषित है। वोटर कवोलीटी इन्डेक्स में रेन्क १२० है।

सुखा हुआ तालाब

पानी की भारी गंभीर समस्या की शुरूआत हो चुकी हैं; ऐसे हालात में मानवी को कोई भी स्थिति में पानी का बिनावश्यक उपयोग और बिगाड़ नहीं करना चाहिए। ऐसा नहीं करेगें तो भविष्य में मानवी को बिना पानी का मरना पड़ेगा!

लाख द्विपो मतलब लक्षद्वीप, लेकिन है कितना?

टुरीझम

◆ पार्थ शाह-अमदावाद ◆

करीबन पांच महीने पहले हमारे प्राइम मिनिस्टर नरेन्द्र मोदी ने लक्ष द्वीप की मुलाकात ली तब गुगल पे सबसे ज्यादा सर्च लक्षद्वीप के बारे में हुए थे। भारत के दक्षिण - पश्चिमी हिंद महासागर स्थित लक्षद्वीप प्राकृतिक सौंदर्य से भरपुर खजानेवाला द्विप है। इतिहास में भी कई जगहों पर इस द्वीप के समूह के बारे में बताया गया है। लेकिन फिर भी लक्षद्वीप समूह के बारे में लोग बहुत ही कम जानते हैं। इसलिए आज हम यहां पे लक्षद्वीप की कई बातें लाए है जो आजतक कम जानने को मिली है।

भारत के समस्त ८ युनियन टेरिटरी में से एक लक्षद्वीप सबसे कम क्षेत्रफल/विस्तार (सिर्फ़ ३२ चो. की.मि.) का है। कुल ३६ द्वीप वाले लक्षद्वीप के सिर्फ़ ९ द्वीप पर ही मानव आबादी बसती है।

संस्कृत और मलयामल भाषा में लक्षद्वीप का मतलब ''लाख द्वीप'' ऐसा होता है। संभावना तो यह भी है कि लक्ष द्वीप में आज के समय में जितने द्वीप है उससे कई ज्यादा द्वीप पहले के समय में होते होंगे। आज भी लक्षद्वीप के पांच द्वीपो के तट पूर्णरूप से पानी में डूबे हुए हैं। कम विस्तार और कम आबादी के बाद भी लक्षद्वीप में भाषा और संस्कृति का अनोखा वैविध्यपन देखने को मिलता है। यहां पर माही और मलयालम भाषा ज्यादा बोली जाती है। साथ साथ यहां के त्यौहार और उत्सवों में भारतीय, अरब, पोर्तुगीज और मुस्लिम संस्कृति की झांकी देखने को मिलती है।

पुरे साल बहुत ही धूप होने के बावजूद भी लक्षद्वीप में सौर उर्जा का उपयोग अभी अभी ही शुरु हुआ है। इसके पहले यहां के लोग डीजल जनरेटर पर अवलंबित थे। यहां फसल के बारे में देखे तो सिर्फ़ नारियेल की खेती होती है। हालांकि यहां के कुछ लोग अपने घर के आंगन में सब्जियां उगाते है, लेकिन उसके सिवा यहां की आबादी आवश्यक सब चीज़ों की आयात

करती है। यहां के कुछ लोग दूध और दूसरी अवश्यकता की वजह से बकरियां पालते है। लेकिन इसके अलावा यहां कोई पशु देखने को नही मिलते। केन्द्र सरकार के तले आने के बावजूद भी लक्षद्वीप समूह के द्वीपों की कानूनी कार्रवाई केरल हाईकोर्ट तले आती है।

लक्षद्वीप नजदीक पानी में मछली और अन्य समुद्री जीवों का वैविध्य देखने को मिलता है। पूरी दुनिया में अपने कद और स्वाद से प्रख्यात और किमत में सबसे महंगी टूना मछली यहा पे भारी मात्रा में पाई जाती है। लक्षद्वीप का स्टेट एनिमल ''बटरफ्लाय फिश'' है। छोटे कद की इस मछली का आकार बटरफ्लाई की पंख जैसा होने की वजह से उसको यह नाम मिला है। विष्व की सबसे तेज रफ्तरवाली सैल फिश भी यहां देखने को मिलती है। बहुत ही सुंदर पेरट और सर्जन मछली भी यहां आए हुए कोरल रिफ में रहना पसंद करती है। साथ ही छुपने में माहिर ऐसा हरमिट केकड़ा भी यहां की कई जगहों पर देखने को मिलते है।

मार्को पोलो ने अपनी किताब में केरल तट पे कुछ द्वीप आए हुए है ऐसा लिखा था। राज राजेन्द्र चोला ने इंडोनेशिया की हद तक लंबी सीमा का एक प्रदेश के रूप में लक्षद्वीप को बताया था। १७ वी सदी के दौरान लक्षद्वीप, टिपु सुल्तान के आधीन था। लेकिन तिसरे एंग्लो मैसुर युद्ध में टिपू सुल्तान का पराज्य होने से लक्षद्वीप पर अंग्रेजो ने अपना कब्जा जमा लिया था। उसके बाद १९५६ में राज्य पुर्नगठन कानून तले लक्षद्वीप को केंद्रशासित प्रदेश घोषित किया गया था। वैसे तो कई विदेशी

खोजकर्ताओं के किताबो में लक्षद्वीप के बारे में जानने को मिलता है। लेकिन यहां सबसे पहले पैर रखनेवाला सबसे पहला विदेशी वास्को डी गामा था जिसने भारत में प्रवेश करने से पहले यहां पर मुकाम किया था।

लक्षद्वीप में पहली सरकारी स्कूल १५, जनवरी १९०४ के दिन अमीना द्वीप पे शुरु की गई थी। उसके बाद इस द्वीप का शैक्षणिक स्तर में बहुत विकास हुआ है। हालांकि यहां पढ़ने वाले छात्रों को डिग्री युनिवर्सिटी ऑफ़ केलिकट की मिलती है। लक्षद्वीप पे आए हुए कुल बारह कोरल अटोल भारत के एक मात्र अटोल कोरल रिफ है। अटॉल कोरल रिफ मतलब घोड़े की नाल के आकार का गोल द्वीप जिसके बीच के हिस्से में खूबसूरत कोरल रिफ होते है। इस तरह के द्वीप कोरल रिफ को पूर्णरुप से सुरक्षित रखते हैं और उनका निमार्ण दुर्लभ होता है। इस दृष्टिकोण से भी भौगोलिक रूप से भी लक्षद्वीप अजूबा है।

वैसे देखा जाए तो लक्षद्वीप की सहेलगाह कठीन है। यहां पहुंचने के लिए अगाती और बंगराम द्वीप पे एयरपोर्ट की सुविधा है इस के इलावा केरल से भी बोट के जरिए लक्षद्वीप पहुंचा जाता है। जिसके लिए करीबन १५ घंटा जितना समय लगता है। हालांकि यहां पर आनेवाले लोगों के लिए हेलीकॉप्टर और स्पीड बोट की सेवाएं उपलब्ध है। लक्षद्वीप आनेवाले सभी यात्रियों को परमिट लेना आवश्यक है। परमिट दो प्रकार की है, एंट्री परमिट, जो सामान्य रूप से ट्रैवल एजेंसी के जरिए ही मिलती है। या तो lakshdweep .gov.in/tourism/entry. permit पर से उसकी माहिती पा सकते है। दूसरी परमिट का नाम है, रिस्ट्रिक्टेड एंट्री परमिट। तीन द्वीप ऐसे है, जहां पे समान्य परमिट होने पर भी नहीं जा सकते है। क्योंकि इस द्वीप के संस्कृति और पर्यावरण अनोखे है। उसके जतन के लिए ही नियम बनाए गए हैं। वो स्पेशियल परमिशन भी epermit.url.gov.in पर से लेनी पड़ती है।

लक्षद्वीप समुद्री विस्तार है इसलिए यहां पर समुद्री जीवों का दबदबा रहा है और खाने में भी आपको ज्यादातर मांसाहारी भोजन ही मिलेगा; शाकाहारी भोजन भी मिलता है लेकिन उसका पर्याय बहुत ही कम है।

पूरा विस्तार द्वीप होने से एक द्वीप से दूसरे द्वीप पर आने जाने के लिए नाव का उपयोग करना पड़ता है और समुद्री वातावरण अगर सही है तो आवन जावन कर सकते है।

रोमानिया के होइया बासीउ भूतिया जंगल की रहस्यमयी बातें

डरावनी दुनिया

◆ हितेष प्रजापति-अमदावाद ◆

दोस्तों, हमने कई बार हमारे मैगजीन में दुनिया के कई जगहों पर बनती घटनाओं के बारे में बताया है।

देखा जाए तो पूरे विश्व में ऐसे कई भयावह स्थल है, जहां जाने से लोग डरते हैं। ऐसा ही एक भूतिया जंगल है जहां रहस्यमयी घटनाएं बनती है। रोमानिया का ट्रांसिल्वानिया तहसील के पुरातन ऐतिहासिक नगर क्लुज - नोपाका के बाहर आया जंगल - होइया बासीउ ऐसा ही एक रहस्यमयी स्थल है । रोमेनियन भाषा में उसका उच्चारण ''होईया बाचु'' होता है।

इस होईया बासिउ (Hoia Baciu) में अनेकों प्रकार की चित्र - विचित्र, रहस्यमयी घटनाएं बनती रहती है। यहां पर कई लोग रहस्यमयी तरीके से गुम हो गए हैं। इसलिए इसको रोमानिया या ट्रांसिल्वानिया के ''बरमूडा ट्राएंगल'' से भी जाना जाता है। इस जंगल का कुछ हिस्सा ऐसा है जहां एक बार जाने से लोग वापिस नहीं आ सकते। जो लोग गुम हो जाते है वो लोग कहीं दूसरी जगह पर भी नहीं दिखाई देते।

इस जंगल करीबन ७०० ऐकर में फैला हुआ है। जंगल का इस नाम वहां के भेड़ बकरियां चराने वाले चरवाहे के नाम से पड़ा है ऐसा कहा जाता है। इस चरवाहे का नाम ''होइया बाचु'' था। वो करीबन २०० भेड़ बकरियां के साथ इस जंगल में अदृश्य हो गया था। अदृश्य होने के बाद कहीं पर भी उसका अता पता नहीं चला और ना उसके २०० भेड़ बकरियां का कोई सुराग मिला।

इस जंगल के पेड़ो का आकार टेड़ा मेड़ा है। इसमें से कई पेड़ भूतप्रेत या कंकाल जैसे आकार के दिखते हैं। यहां के स्थानीय लोग बताते हैं कि, कई सालों पहले जो कई किसानों की हत्याएं की गई थी उनकी आत्माएं भटक रही है विचित्र हरकतें करती रहती है। इस जंगल का वातावरण भी अलग प्रकार का है। इस जंगल में प्रवेश करते ही एक अलग प्रकार की अनुभूति होती है। जैसे की अचानक ही शरदर्द होना, गभराहट महेसुस करना और बेचैनी बढ़ जाना जैसे अनुभव होते है। ऐसा लगता है की वहां आपको कोई देख रहा है। वहां कोई मानवी ना होने पर भी मनुष्यो जैसी आवाजें आती रहती है। किसी को धुंधली भूतिया आकृति दिखाई देती है तो किसी को रहस्यमयी रोशनी दिखाई देती है। लेकिन जब ये सब चीज़ों की तलाश करते है तब कुछ भी मालूम नहीं होता है कि कहां से आवाजे आती है और कहां से रोशनी आती है।

इस जंगल के एक हिस्से को ''डेड झोन'' कहते है। इस जगह पर कोई भी पेड़ पौधे होते नहीं है। इस जगह से मिट्टी का सेंपल लेकर बैज्ञानिक रुप से उसका परीक्षण भी किया गया था। लेकीन कुछ ऐसी वजह सामने नहीं आई की वहां पे कोई पेड़ पौधे और वनस्पति उगे नही। इस जगह पर प्रवेश करने से आपको ऐसा अनुभव होता है कि आप अचानक से ही अकेले पड़ गए और पूरी दुनिया से अलग हो गए है। आपको ऐसा लगता है कि आप समय क्षेत्र और स्थान से बाहर आ गए हैं। यहां पर आनेवाले लोग पत्ता नहीं कर पाते है कि कितना समय

बीत गया है वो भी किसीको याद नहीं रहता इसलिए उसको लॉस्ट टाइम (Lost Time) के रूप में जाना जाता है।

ऐसा भी कहा जाता है कि, उन्नीसवीं सदी में १८७० के साल दौरान पास के गांव में रहने वाली एक किसान पुत्री गलती से इस जंगल में चली गई थी और रहस्यमय रूप से गायब हो गई थी। उस समय में उसकी बहुत खोज बीन कीगई लेकिन वो नहीं मिली। आश्चर्य जनक बात तो यह बनी की पांच साल बाद वो अचानक ही जंगल में से बाहर आई लेकिन तब उसकी याददास्त चली गई। इसी वजह से वो इतने साल कहां पे थी, क्या कर रही थी, उसके साथ क्या हुआ था इन सब बातों की जानकारी नही मिली। जंगल से बापिस आने के बाद थोड़े ही समय में रहस्यमयी तरीके से उसकी मौत हो गई।

यह होइया बासिउ जंगल १९६८में ज्यादा प्रचलित हो गया। उस साल में मिलिट्री टेक्निशियन एमिल बर्नीया (Emil Barnea) उसकी गर्लफ्रेंड और कुछ दोस्तों के साथ जंगल में घुम रहा था। वो अगस्त माह का दिन था और दोपहर का सूर्य प्रकाश वाला समय था। उस समय एमिल की गर्लफ्रेंड ने देखा कि आकाश में कोई उड़न खटौला जैसी चीज उड़ रही थी, जैसे परग्रहवासी का आकाश यान उड़ रहा हो। वो रोमांचित हो गई और उसने एमिल को भी ये नजारा दिखाया। तब एमिल के पास कैमरा भी मौजुद था उसने जल्दी से उड़नेवाले यान के चार फोटो भी खींच लिया। एमिल, उसकी गर्लफ्रेंड और अन्य दोस्तो को भी वो उड़नेवाला गोलाकार जैसा यान करीबन दो मिनट दिखाई दिया। बाद में धीरे धीरे वो अवकाश में अदृश्य हो गया। एमिल ने वो फोटोग्राफ्स पब्लिश भी किया और उसका तकनीकी रूप से परीक्षण भी किया। उसमें भी यह मालूम पड़ा कि यह सब फोटोग्राफ्स असली है और उसके साथ कोई प्रकार की छेड़छानी नही की गई है। एमिल ने यूएफओ (UFO) याने की अन्नभिन्न उड़यन यान देखा इस के साथ एक अलौकिक शरीर भी देखा था। इस जंगल में घुमने आते कई साहसिक लोगों ने ऐसी घटनाए देखी है ऐसा उन्होंने बताया था।

एकबार इसी ही तरह कुछ पर्यटको का एक गुट होईया जंगल की सैर करने गया था। तब, वहां से वापिस आते समय एक विचित्र घटना बनी थी। उन लोगों ने देखा कि उनके बदन पर आग से जलने और नाखून लगने से निशान अपने आप दिखाई देने लगे थे। जहां पे आग से जलने का निशान था वहां पर दर्द हो रहा था और जहां पे नाखून का निशान था वहां पे लहू की टशर फूटी हुई थीं। यह घटना विस्माय कर्ता है क्योंकी वो लोग कहीं भी आग से जले नहीं थे और नहीं किसी पशु पक्षी ने उसे नाखून से काटा था। उन लोगों को मालूम नहीं पड़ा की ये क्या हो रहा है और क्यूं हो रहा है? बहुत ही सोचने के बाद को लोग ऐसे नतीजे पर आए की यहां जो प्रेतात्माए रहती है उसीका ये काम है। इस जंगल की मुलाकात लेनेवाले लोग बताते हैं कि यहां पर कोई ना कोई विचित्र और डरावनेवाली अनुभूति जरूर से होती है। किसी को स्त्रीयों की खी... खी... खी हसने की आवाज़, किसी को युवां लड़की की चिखने की आवाज़, किसी को उसके सामने नज़र मिला के घुरने की आवाज़ तो किसी को यहां से वहां पर दौड़धाम करती भूतिया आकृतियां नज़र आती है।

यह बाते सुनकर और लोगों को हुए अनुभव के कारण कच्चे और नरम दिलवाले लोग तो इस जंगल से दूर ही रहते है और ऐसी रहस्यमयी बातें सुनने को भी इनकार कर देते है और कहते हैं कि, ''हमे माफ कर दीजिए, हमें ऐसी बातें नहीं सुननी है। क्योंकि ऐसी बातें सुनकर हमारे दिल की धड़कनें बढ़ जाती है और घभराहट होने लगती हैं।''

सिसिलिया द्वीप का केरोनिया गांव जहां अचानक बिना कोई वजह से आग जलती है

अहो वैचित्र्यम्

अशोक मकवाणा-जूनागढ

पूरी दुनिया अनेक रहस्यों से भरपूर है। फिर वह चैतिक शक्तियों का हो, अचैतिक शक्तियों का हो, पुनर्जन्म का हो या अगोचर का। विश्व में ऐसी कई जगह है जहां अनेक रहस्यमयी घटनाए बनती है। लेकिन इस घटनाओं का रहस्य आज भी रहस्य ही रहा है। कोई नहीं जान पाया कि ऐसी घटनाए क्यों और कैसे हो रही है ?

आज हम ऐसे ही एक जगह में बनती रहस्यमयी घटनाओं की बात करेंगे।

अगर आप आराम से अपनी कुर्सी पर बैठकर संगीत सुनते हो तब अचानक से कुर्सी में आग लगे तो ? आप जिस चारपाई से सोते हो तो अचानक की चारपाई की दूसरी ओर से आग की लपेटे निकलना चालू हो जाए तो ? अगर अलमारी में रखे पुस्तक को निकालने के लिए आप अलमारी का दरवाजा खोले तब वहां पास में पड़ी किताब में अचानक आग लगे तो ? घर के गेराज में पार्क की हुई गाड़ी में बैठकर आप बाहर जाने के लिए गाड़ी स्टार्ट करो उसके पहले ही गाड़ी के किसी भाग से आग लगने की वजह से धुआं उठने लगे तो ?

आपको ऊपर लिखी हुई सब बातें या घटनाएं काल्पनिक लगती होगी लेकिन इटली के पास आए सिसिलिया द्वीप मे आया केरोनिया गांव में रहने वाले लोगों के लिए यह बातें काल्पनिक नहीं है। यहां ऐसी घटना है आए दिन बनती रहती है। पश्चिम के देशों में दिसंबर महीने में डरो डराओ, मोज मनाओ जैसे हेलोवीन फेस्टिवल होते हैं। लेकिन यहां पर केरोनिया गांव के रहने वालों लोग लगातार डर के साथ ही जीते हैं। पिछले १० साल से ज्यादा सालों से अचानक की आग भभुकने लगती है। गद्दे, रजाई, सोफा, कार, कुकर, किताबें ,होम अप्लायंसेज, कुर्सी,चारपाई, मोबाइल, बैटरी से चलते कोई भी रुप के गेजेट्स, पानी की पाइपलाइन ऐसे कहीं भी और कभी भी अचानक से आज भभुकने की घटनाएं बनती ही रहती है।

२००४ में जब केरोनिया में पहली बार आग लगने की घटनाएं होने लगी तब वहां पर रहने वाले लोग घबरा उठे थे और साथ-साथ लोकल अर्थोरिटी भी डर गई थी।

जब १ दिन में ही अग्निशमन दल को १०० से ज्यादा आग लगने की फरियादें मिली तब लोकल अर्थोरिटी को ख्याल आया कि ये तो गंभीर घटनाएं है। देखने लायक बात यह है कि यह सब आग लगने की घटना में कोई भी कारण सामने नहीं आया जैसे कि वैक्यूम क्लीनर कोने में पड़ा पड़ा अचानक ही सुलगने लगे तो क्या समझे ? दूसरी घटना में ऐसा हुआ कि टोस्टर का प्लग पीन पॉकेट में नहीं लगाया था फिर भी अचानक से टोस्टर में आग लगे तो क्या समझा जाए ? मोबाइल स्विच ऑफ हो और टिपोय पर पड़ा हो। तब अचानक ही उसमें आग लगे तो क्या समझा जाए? ऐसी घटनाए बन ने से लोकल ऑथोरिटी ने पूरे गांव के बिजली का कनेक्शन बंद कर दिया फिर भी ऐसी आग लगने की घटनाए तो चालू ही रही। इसलिए ऐसी घटना का रहस्य जानने के लिए पूरा गांव खाली करवाया गया। नेशनल इंस्टीट्यूट आफ जिओ फिजिक्स और वोल्कनोलॉजी यानी की भौतिक शास्त्र और ज्वालामुखी के विषारदो और इंडियन नेवी के निष्णांतो को भी बुलाया गया था तब भी पूरे

हिंदी फिल्मों के डायलोगों की तरह ही केरोनिया में रहने वाले लोग भी कह रहे होंगे कि.... ''जानी, आग से हमें मत डराओ, आग से तो हम रोज खेलते हैं.''

खाली गांव में आग लगने की घटनाएं बनती ही रही थी। महीना बीत गए लेकिन निष्णांतो को ऐसी घटना के बारे में कुछ पता नहीं चला, एक बात हुई की आग लगने की घटनाओं की फ्रिक्वन्सी कम हो गई। आखिरकार इस गांव के लोगों ने सोचा की समस्या का कोई हल नहीं है फिर कितने दिन तक गांव के बाहर रहे लोग वापस गांव में रहने को आ गए और अपनी रोज-रोज की जिंदगी जीने लगे।

अब इस गांव के लोगों ने ऐसी आग लगने की घटनाओं को अपने जीवन के साथ जोड़ दी है। उस पर ध्यान न देते हुए अपना जीवन सामान्यतः रूप से बिताने लगे हैं। यह आग कब और क्यों लगती है यह जानने के लिए निरंतर हाई रैंकिंग आर्मी ऑफिसर्स, इंजीनियर्स, भूष्टरशास्त्री और भौतिक शास्त्रियों की एक टास्कफोर्स की रचना की गई है जो लगातार इस गांव के चारों ओर रहे इलेक्ट्रो मैग्नेटिक फील्ड, रेडियो इलेक्ट्रिक स्पेक्ट्रम, मैग्नेटोमेट्रिक फील्ड और जमीन और हवा में रहे केमिकल्स के डेटा का अध्ययन किया था। लेकिन आग क्यों लग रही है इसका कोई नतीजा निकाल नहीं सके।

थोड़े वर्षो में आग लगने की फ्रीक्वेंसी कम हो गई थी इसलिए गांव के लोगों में राहत का दम लिया ही था, तब सितंबर २०१४ में फिर से ऐसी आग लगने की घटनाओं ने रफ्तार पकड़ी थी। एर कंडीशनर आग और धुआं की वजह से पिघल गया, पानी की पाइपलाइन और कंप्यूटरो आग में सुलग गए। सिर्फ़ ३५ घंटो में एक ही घर में तीन बार अलग-अलग चीज आग में भस्मी भूत हो गई। एक ही साथ, एक ही दिशा में आए हुए घरों में करीबन १२ से ज्यादा सोफा सुलगने लगे और रोज के ५० से ६० किस्से आग लगने के बनने लगे

इतने सारे अलग-अलग विषयों के निष्णतो की अनेकों तपासो के बाद भी इस बारे में कोई नतीजा नहीं आया। साइंटिस्टीट सिर्फ इतना कह सकते हैं कि कोई अनजान इलेक्ट्रिक इलेक्ट्रोमैग्नेटिक रेडियंस रेडिएशन ऐसी घटनाओं के लिए जिम्मेदार है। लेकिन कौन सी वजह से वह मालूम नहीं पड़ा था। जब विज्ञान के जरिए हुई समस्या का समाधान ना तब मनुष्य को लगता है कि ऐसी कोई सुपर नेचुरल ताकत है जिसके कारण ऐसी आग लगने की घटनाएं बनती रहती है। कोई लोग ऐसे भी बातें करने लगे की दूसरे ग्रह से एलियंस आते हैं और आग लगाकर चले जाते हैं।

मुहावरा है ना कि... ''जितने मुंह इतनी बातें''। ईश्वर की माया अकल है। जिसको कहां कोई समझ में पाया है। अब तो केरोनिया गांव के लोगों को भी ऐसी आग की घटनाओं की आढ़तें हो गई है और अब यह सब घटना यह उन लोगों के लिए अब आम बात हो गई है। मालूम नहीं कब तक निष्णांतो इस समस्या को सुलजा सकेंगे। लेकिन अब तो हिंदी फिल्मों के डायलोगों की तरह ही केरोनिया में रहने वाले लोग भी कह रहे होंगे कि... ''जानी, आग से हमें मत डराओ, आग से तो हम रोज खेलते हैं।''

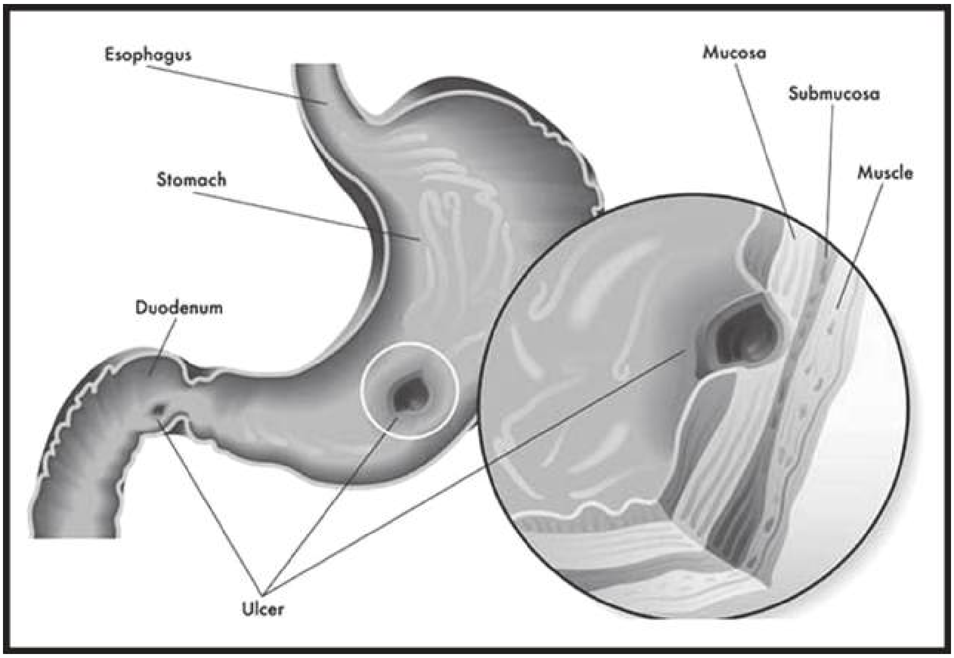

गैस्ट्रिक अल्सर: सावधानी और उपाय

स्वास्थ्य

◆ योगेन्द्र पंड्या ◆

दोस्तों, हम हमारे मैगजीन में स्वास्थ्य के बारे में आपको अलग अलग बिमारियों के बारे में बताते रहते हैं और उस से दूर रहने का और बिमारी का उपाय भी बताते हैं। आज हम बात करेंगे गेस्ट्रीक अल्सर की।

चांदा (अल्सर) कैसे होता है ?

खुराक जब पित्ताशय में पहुंचता है तब पेप्सीन और हाइड्रोक्लोरिक एसिड (HCl) जैसे पाचक रसो सक्रिय हो जाते है। इसमें भी HCl to इतना जलद है कि इसमें रखी हुई ब्लेड की करीबन चौदह से अठारह घण्टे में पिघलने जैसी हालत हो जाती है। तो क्या ऐसे जलद और उग्र रसों की बूरी असर पित्ताशय में नही होती होगी? ऐसा ना हो इसलिए आंतरिक अंगों पर एक प्रकार के रक्षणात्मक स्तर (MUCOUS MEMBRANE) रहता है। जिसमें से निकलते क्षारीय (ALKALINE) रसों से जलद जैसा अम्ल (ACIDIC) पाचक रसों की असर कम होती है लेकिन अगर ऐसा न हो तो ? मतलब के जलद पाचक रसों के हमले के सामने क्षारीय रसों से होता रक्षण का तंत्र बिगड़ जाए तो अल्सर होता है। कभी ऐसा भी होता है कि रक्षणात्मक स्तर बहुत ही पतला या हो ही नहीं तब भी अल्सर हो सकता है। अन्ननली (OESOPHAGUS), ग्रहणी (DUODENUM) या पित्ताशय (STOMACH) जैसे स्थानों पे अल्सर होने की संभावना रहती है।

अल्सर होने की वजह:

गेस्ट्रोनोमा जैसी गांठ (TUMOR), दांत

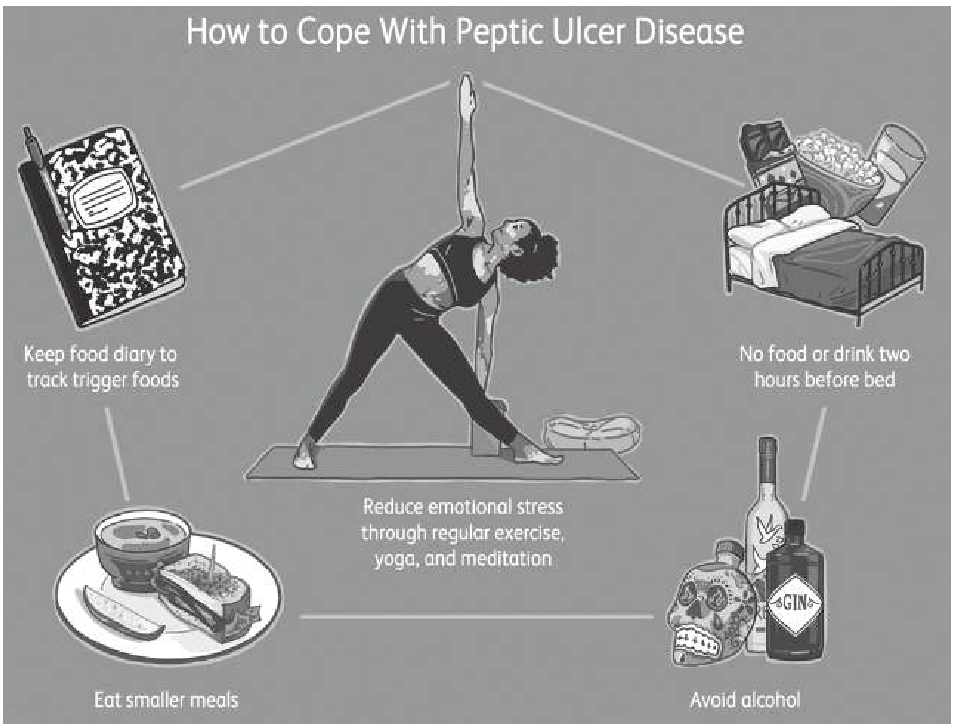

के सड़े से पैदा होते कीटाणु का पेट में जाने से, एड्रीनेलिन या गैस्ट्रिन जैसे हॉरमोन की ज्यादा सक्रियता, डायाबीटिस, विटामिन १२ की कमी, ज्यादा परिश्रिम या जगराता, ज्यादा मात्रा में खट्टे और तीखे पदार्थो और कृत्रिम रंग और सुगंधित पदार्थो के सेवन जैसे कई वजह अल्सर होने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका रखते

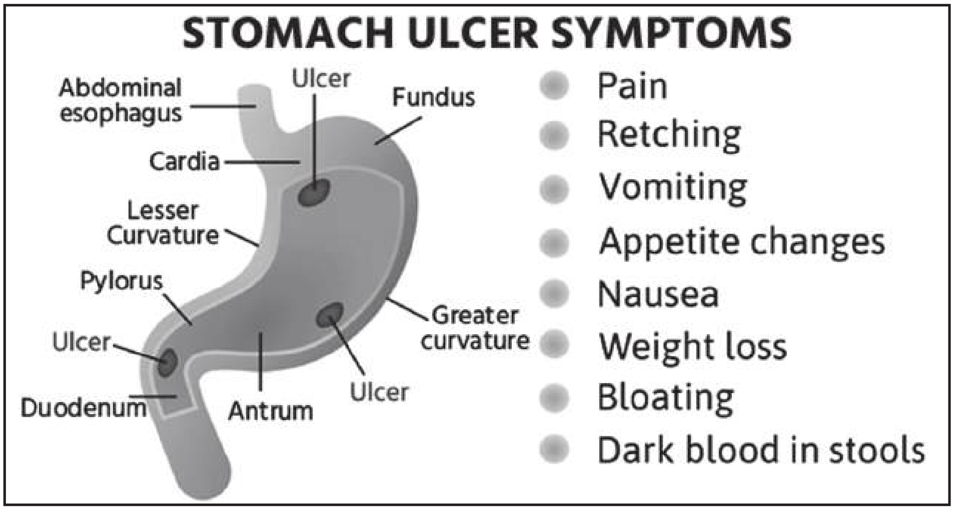

अल्सर होने का आसार:

जिस जगह पे अल्सर हुआ हो, उस जगह पर खासतौर पर सीने के बीच में पसलियों से नीचे दांए या बाएं और असहनीय दर्द और जलन होना, सामान्यतः भोजन करने के बाद आधा या एक घण्टे के बाद ऐसा होता देखा जाता है। कभी कभी बैचेनी, शरदर्द, खट्टी वॉमिट या डाएरिया जैसे आसार कुछ हद तक अल्सर होने की संभावना से जुडे हुए है जो शरीर में बढ़ती अम्लता (ACIDITY) के सूचक है। लंबे समय से हुए, गहरे चले गए अल्सर मे डायेरिया या वॉमिटिंग के जरिए खून निकलने जैसे गंभीर आसार दिखाई देते है।

अल्सर का उपाय:

सारवार की बात करें तो, यहाँ पे बताई गई बातों को ध्यान से पढ़कर उसका तीस दिन तक पालन करना आवश्यक हैं, ऐसा करने से अवश्य ही फायदा होगा।

(१) भोजन के समय और भोजन करने के बाद तुरन्त ही ज्यादा पानी ना पिए। एकाग्रता से शांतिपूर्वक और खुशी के साथ भोजन करना। बातें करते करते, टीवी देखते देखते और अगर दिमाग में खयालों चलता हो तब भोजन नहीं करना चाहिए। अन्न का निवाला गले से नीचे उतारने के लिए नहीं, लेकिन चबाने के लिए होता है। जब हम खुराक को चबाते है तो उस समय टापलीन जैसा पाचक रस खुराक को पचाने का काम करता है। आत्मनिरीक्षण कर के यहां दर्शायी गई कोई बूरी आदत आपको हो तो ऐसी बूरी आदतों से दूर रहना चाहिए। उपवास, एक टंक खाना विगेरे से दूर रहो।

(२) दहीं, इमली, आचार, टमाटर, खट्टे फलो का सेवन ना करें। ब्रेड, ढोकले, खमन जैसे आथेवाले खाने से दूर रहो। खास तौर पर लाल-हरी मिर्च, लहसुन, तीखा, तज, लॉन्ग, हींग, बेंगन, बाजरी जैसे गर्म और उष्ण पदार्थो का पूर्णरूप से त्याग करो और पान, गुटका और एल्कोहोल जैसे व्यसन हो तो उसको त्याग देना बेहद आवश्यक है।

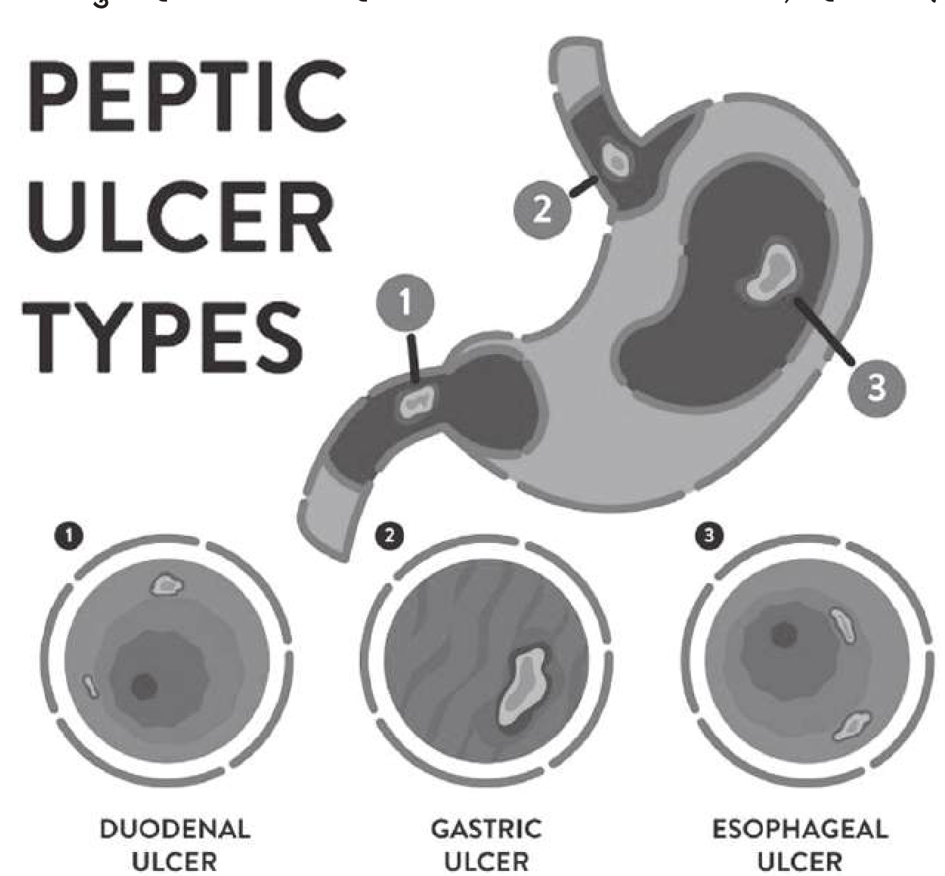

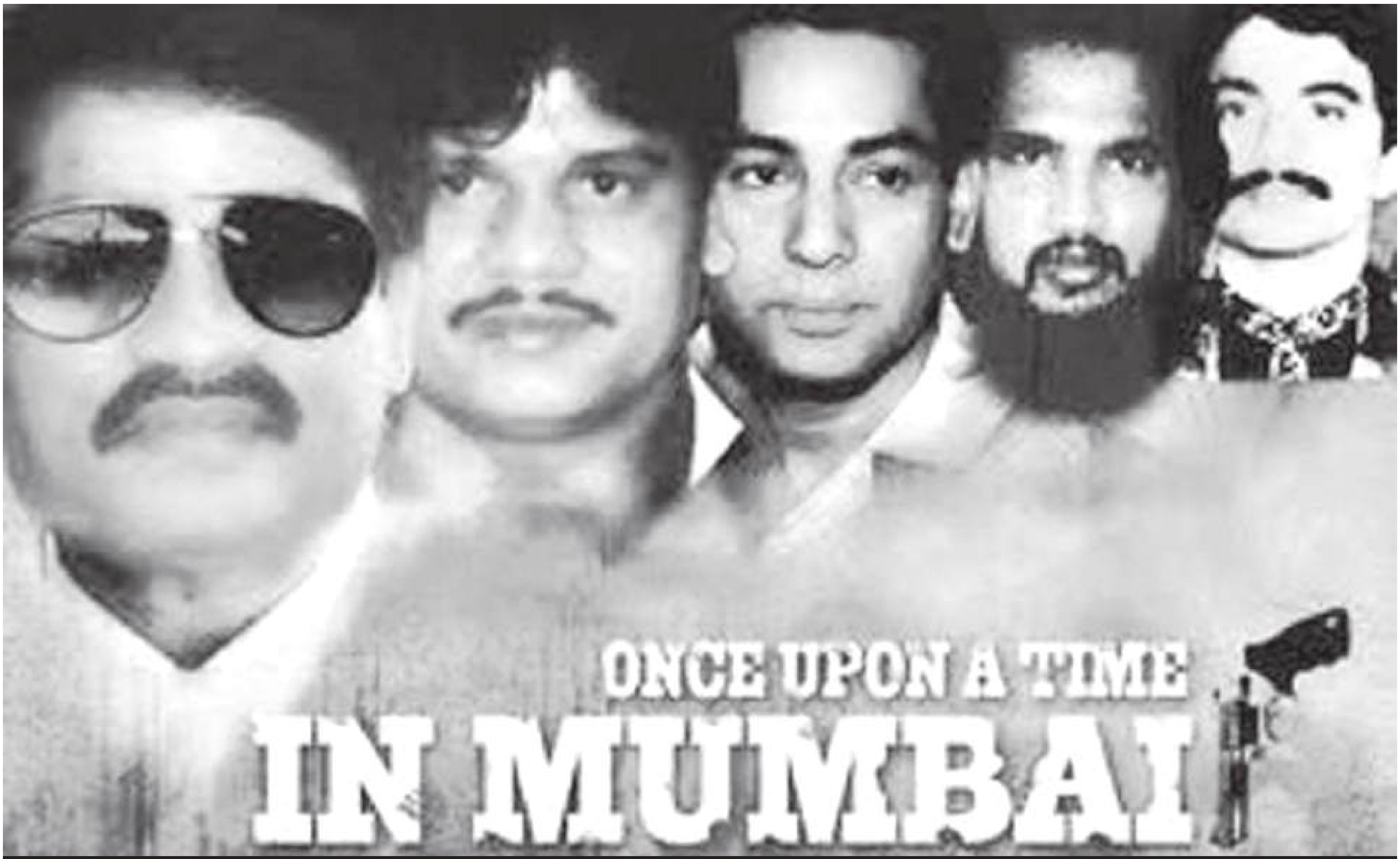

मुंबई के अंडरवर्ल्ड की खोफनाक बातें

(गतांक से चालु...)

इक़बाल नतीक के मन में पठानों और उनके अनैतिक आचरण के प्रतिजन्मजात नफरत थी। दाऊद के लिए नतीक साहस की जीती जागती मुर्ति था, जिसने अमीरजादाआलमजेब, अयूब लाला और सईद बाटला जैसे निरंकुश पठानों के बीच एकदम सही ढंग से जीवन जिया था। बल्कि उसने उन्हें चुनौती दी थी और उनकी काली करतूतों को लगातार उजागर किया था। लेकिन नतीक साहस और दुस्साहस के बीच फ़र्क करने में नाकामयाब रहा था। कम से कम, सच्चाई को सामने लाने की उसकी लड़ाई उसे बहुत दूर ले गई थी।

अब दाऊद नतीक की ज्यादातर खबरों का मुख्य स्रोत था। दाऊद के लड़के छोटी छोटी खुफिया सूचनाएं और पान की दुकानों पर उड़ाई जाने वाली अफवाहें इकट्ठा करते और नतीक तक पहुंचाते, जो इन चटपटे किस्सों को अखबार की सुर्खियों में बदल देता। ज्यादातर मामलों में ये किस्से अपुष्ट हुआ करते थे लेकिन दाऊद पर अपने भरोसे के चलते नतीक ये जोखिम उठाता था। इनके लिए उसे कभी अदालती कारवाई का सामना तो नहीं करना पड़ा लेकिन उसे पठानों की दबी छुपी धमकियों और बैर का सामना ज़रूर करना पड़ा था, जो बीआईटी कंपाउंड में बैठकें किया करते थे।

अब जबकि पुलिस और प्रेस उसके साथ थे, दाऊद कोई नाचीज़ नहीं रह गया था। अपनी अपराजेयता की बुलंदियों पर पहुंचा हुआ दाउद अब खुद भी हालात का जायजा लेना चाहता था। वह जानता था कि जब तक उसने बाशु दादा को सिंहासन से नीचे नहीं गिराया था तब तक बाशु किंगमेकर हुआ करता था। जिस किसी भी पार्टी का वह समर्थन करता वह बिना कुछ किए धरे जीत जाती और जिससे वह नाता तोड़ लेता वह कभी नहीं जीत पाता था। मौलाना बुखारी का मामला बाशु के इसी रुतबे और ताक़त

की एक मिसाल था। और दाउद देखना चाहता था कि क्या वह भी वैसे ही रुतबे और ताक़त का प्रयोग कर सकता है जैसा बाशु करता था। इसीलिए दाऊद ने नतीक को लोकसभा का चुनाव लड़ने की सलाह दी।

राजनैतिक महत्त्वाकांक्षाएं कभी भी अटकलों पर टिकी नही होनी चाहिए। यकीनन, वह बहुत अच्छा पत्रकार और उस क्षेत्र में एक जाना माना नाम था, और ये चीजें उसे आम लोगों का चहेता बना सकती थी। लेकिन नतीक ने इन चीज़ों के आधार पर चुनाव जीतने का भ्रम पालने की गलती की थी। उसने १९७७ के लोकसभा चुनाव के लिए निर्दलीय उम्मीदवार के रुप में अपना नामांकन दाखिल कर दिया।

दाऊद का खयाल था कि अपने लड़कों के मार्फत वह नतीक को जरूरी समर्थन उपलब्ध करा देगा और उसे चुनाव जीता ले जायेगा। डॉन बनने की आकांक्षा रखने वाले दाऊद के लिए यह एक कठीन परीक्षा की घड़ी थी।

हालांकि जैसा कि होना था, नतीक बुरी तरह से चुनाव हार गया और उसे बमुश्किल वोट मिल सके। भारतीय लोक दल के राजदा रतनसिंह गोकुल दास आराम से जीत गए।

नतीक के इस नुकसान से मायूस हुए बिना दाउद के मन में यह बात बैठ गई कि ताक़त की जिस बुलंदी पर वह पहुंचना चाहता है उससे वह अभी बहुत दूर है। अब उसे वहां पहुंचने के लिए कड़ी मेहनत करने की जरूरत है। नतीक पहली बार चुनाव लड़ा था; यह स्वाभाविक था कि वह उतना अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सका, उसने अपने प्रत्याशी को समझाया। अगली बार जीत उसकी होगी। यह एक ऐसी कैफियत थी जिसे नतीक ने बेहिचक स्वीकार कर लिया। लेकिन नतीक की मुश्किलों का प्याला छलकने लगा था। क्योंकि पठानो द्वारा इब्राहिम रहीमतुल्लाह रोड पर चावला गेस्ट हाउस में एक आदमी की निर्मम हत्या किए जाने और उसकी नवविवाहिता बीवी के साथ बलात्कार करने को लेकर नतीक की कारवाई से पठान इस नतीजे पर पहुंच चुके थे कि नतीक एक विघ्नसंतोषी जीव है।

हुआ यह कि पठान अपनी तस्करी का सामान इस गेस्टहाउस के आस पास कहीं छुपाया करते थे। अयूब लाला और सईद की नज़र इस नवदंपति पर पड़ गई जो अपने किसी काम से इस गेस्ट हाउस में ठहरे हुए थे। एक रात, इन लोगों ने जबरन उनके कमरे में घुसके महज़ अपनी हवस को शान्त करने की खातिर औरत के साथ सामुहिक बलात्कार किया और सबूत मिटाने के लिए उसके पति की हत्या कर दी।

लोगों की मंशा हत्यारों का नाम उजागर करने की नहीं थी, लेकिन नतीक ने आगे बढ़कर एक एक चीज उजागर करते हुए पूरे किस्से को छाप दिया। पुलिस मामले में सेंध लगाने में कामयाब हुई और उसने अयूब लाला, बाटला और सईद समेत उनके दूसरे सहयोगियों को गिरफ़्तार कर लिया।

कई महीने जेल में गुजारने के बाद इन अपराधियों को ज़मानत मिल गई और वे बीआईटी कंपाउंड में कैरम क्लब के अपने ठिकाने पर वापस लौट आए। वे नतीक को ख़त्म कर देने की योजना बना रहे थे लेकिन उसे मारने के लिए पर्याप्त हिम्मत नहीं जुटा पा रहे थे। आखिर उन्हें जमानत ही तो मिली थी।

तब भी, वे नतीक को धमकियां देने लगे। उन्हों ने उसके छोटे से संपादकीय कार्यालय को तहस नहस करने की कोशिश की। नतीक ने डोंगरी पुलिस स्टेशन

में शिकायत दर्ज करवाई कि कैरम क्लब कई तरह की असामाजिक गतिविधियों का अड्डा बन चुका है और नतीजतन पुलिस ने क्लब पर छापा मारा और उसे बंद कर दिया, यह नतीक की बड़ी भारी जीत थी और पठानों के लिए इंतहाई घटना थी।

१७ अगस्त, १९७७ की उस दुखद रात को करीब ३.३० बजे जब नतिक सोया हुआ था, दरवाजे पर लगातार दी जा रही दस्तको से उसकी नींद टूटी। उनिंदे नतीक ने दरवाजा खोला और वहां सईद को खड़ा हुआ पाया।

'' तुमको भाई ने बुलाया है'', सईद ने कहा। यहां भाई का मतलब था अमीरजादा।

''क्या बकवास है। तुमने वक्त देखा है? मैं अभी नहीं आ सकता। मैं उसे कल मिलूंगा'', नतीक ने जवाब दिया।

''नहीं, वे तुमसे अभी मिलना चाहते हैं'', सईद ने ज़ोर दिया।

''क्या तुम पागल हो गए हो ? मेरी बीवी घर में अकेली हैं, मैं उसे इस तरह छोड़कर नहीं आ सकता,'' नतीक ने उसे समझाने की कोशिश की।

''इकबाल भाई, भाई बहुत बुरे मूड में हैं। अगर तुम अभी नहीं मिल लोगे तो मुसीबत को आसानी से टाल लोगे। अगर तुमने अपने अदियलपन से उन्हें भड़का दिया, तो ये आपको बहुत महंगा पड़ सकता है'', सईद ने कहा, जो अपनी धमकी भरे लहज़े से इशारा कर रहा था कि अगर जरूरत पड़ी तो वे उसे उसके घर से भाई के अड्डे तक घसीटते हुए भी ले जा सकते है।

नतीक का मन तो नहीं कर रहा था पर उसे

लगा कि इन लोगों से बहस करने से कोई फायदा नहीं है। बेहतर है कि वह भाई के पास जाकर उससे बात करके मामले को निपटा ले।

नतीक की २२ वर्षीय बीवी जाहिदा शहर के लिए नई थी। वह परेशान थी और उड़ती सी आशंका ने उसके दिल को जकड़ रखा था; वह अपने पति को ऐसे वक्त पर जाने से रोकना चाहती थी। लेकिन नतीक को यकीन था कि वे वाकई उसकी हत्या करने की हद तक नहीं जायेंगे, और उसने उसे किसी तरह हिम्मत बंधाई, और सईद के साथ तथा अयूब लाला के साथ चला गया। उन्होने सड़क पार की और कार में बैठ गए, जो बीआईटी कंपाउंड के एकदम बाहर पेट्रोल पंप पर खड़ी हुई थी।

नतीक बैठ भी नहीं पाया था कि उस पर गालियों की बौछारें पड़नी शुरू हो गई। नतीक सकते में आ गया और उसने तुरंत ही कार में से उतरने की कोशिश की, लेकिन तब तक कार गति पकड़ने लगी थी। अयूब और सईद ने उसे जोर से थप्पड़ भी मारे। नतीक इस हमले के लिए जरा भी तैयार नहीं था, और बेइज्जती के एहसास के मारे उसकी आँखें छलछला आई।

नतीक के विरोध के बावजूद भी कार भागती रही और ग्रांट रोड पर कादर बिल्डिंग पर जाकर ही रुकी, जहां अमीरजादा का ऑफ़िस हुआ करता था। ऑफ़िस में पहुंचने पर नतीक को और भी बेइज्जती और हिंसा झेलनी पड़ी।

''दाऊद के कुत्ते, बहुत होशियारी करता है''।

दुबला और छरहरा नतीक मुक्केबाज़ी के इस्तेमाल किए जाने वाले बोरे में बदल गया; उस पर बेरहमी के साथ मुक्के और लातें बरसने लगी। तभी सईद, जो नतीक के लेख की वजह से जेल में भोगी गई अपनी तमाम तकलीफों का ठीक ठाक बदला लेने का इंतजार कर रहा था, ने एक गंडासा निकाला और उस पर कई घातक वार किए। नतीक का बेतहाशा खून बह निकला और वह बेहोश हो गया। गुन्डों ने उसे एक बार फिर कार में पटका और उसे माहिम तक ले गए, जहां माहिम के करीब एक एकान्त जगह में वे अधमरे नतीक को पटककर चले गए।

माहिम के विशाल गटर के करीब मल मुत्र और तमाम दूसरी गंदगियों के बीच पड़े नतीक को तीसरे पहर की तेज धूप में होश आया। उसे कोई अंदाजा नहीं था कि वह उस हालत में कितने घंटो से पड़ा हुआ था। लेकिन उसे यह बात अच्छी तरह से पता थी कि वह ढेर सारा खून गवां चुका है, जिन्दगी उसके भीतर से धीरे धीरे रिसकर बाहर होती जा रही थी। उसमें कोई ताकत नहीं बची थी, लग रहा था जैसे उसके अंग सीसे में बदल गए हो। लेकिन नतीक को एहसास था कि अगर उसे जिन्दा बने रहना है तो इसके लिए उसे बहुत बड़ी कोशिश करनी होगी। चूंकि वह खड़ा नहीं हो सकता था इसलिए उसने हाथों और घुटनों के बल रेंगना शुरु कर दियाऔर किसी तरह सड़क तक पहुंचा, जहां क़िस्मत से दो आदमियों और एक ट्रैफिक पुलिस वाले ने उसे देख लिया।

उन्होने उसे तुरन्त एक गाड़ी में डाला और जेजे अस्पताल ले गए, जहां उसके परिवार को इत्तला दी गई। दाऊद को भी इस हमले की ख़बर दी गई और वह भी अपने दोस्त को मिलने भागा। कमज़ोर नतीक ने डोंगरी पुलिस स्टेशन के अधिकारियों को बयान दिया, और अपने दोस्त दाऊद को तमाम दूसरे ब्यौरे दिए। लीखा स्वयं नतीक से बात करने आया और वह जब तक बोलता रहा उसके पास खड़ा रहा।

नतीक की इस दुर्दशा के लिए दाऊद एक तरह से खुद को दोषी ठहरा रहा था, और उसे और भी ज्यादा तकलीफ हो रही थी। डॉक्टरों की तमाम अच्छी से अच्छी कोशिशों के बावजूद नतीक बच नहीं सका; इनसेंटिव केयर यूनिट (आइसीयू) में दो दिन तक असहनीय पीड़ा भोगने के बाद उसने दम तोड दिया। दाऊद, सबीर और उसके लड़के पठानों की इस हरकत से आगबबूला थे और खुद को उनके हाथों पिटा हुआ महसूस कर रहे थे। नतीक ने आखिरकार पठानों के खिलाफ़ किलेबंदी जो की हुई थी।

दाऊद ने ऐसा मातम कभी महसूस नहीं किया था। यह पहला ऐसा मौका था जब उसके इस कदर प्यारे दोस्त और करीब करीब एक भाई जैसे व्यक्ति की इतनी निर्ममता के साथ हत्या की गई थी। उसने एक ऐसा इंतकाम लेने की कसम खाई कि पठान कभी उसके इलाके में क़दम रखने का ख़्वाब भी नहीं देखेंगे। इंतकाम स्वाभिमान को वापस हासिल करने का अकेला तरीका था। फुलों से सजी इकबाल की कब्र पर खड़े हो कर दाउद ने इंतकाम की कसम खाई, ''इकबाल भाई, मैं कसम खाता हू, जिस तरह उन लोगों ने तुम्हें मारा है, उसी तरह मैं भी उन्हें मारूंगा।'' दाऊद के पास खड़े ऑफिसर लीखा ने इस २२ वर्षीय प्रतिशोधी के कन्धे पर हाथ रखा और उसे हर तरह से मदद करने का यकीन दिलाया''।

बम्बई माफिया के क़िस्से सुनाने वालों के

बीच दशकों तक इस पर बहस चलती रही कि क्या पत्रकार इकबाल नतीक की हत्या ही वह सबसे बड़ी निर्णायक घटना थी जिसने सब कुछ बदलकर रख दिया। क्योंकि तब तक २२ वर्षीय दाऊद ने हत्या या खुनखराबे पर अपना हाथ नहीं आजमाया था। नतीक की हत्या ने बंबई में कत्ल-ए -आम के जश्न की शुरुआत कर दी।

यह १९७७ था। स्याह धुंध की मानिंद छाई हुई मौत फरेब का हल्का सा एहसास लिए दाऊद की रग रग को निगलने को आतुर थी। सिर्फ़ इंतकाम ही था जो दाऊद को उस उन्माद और खालीपन से मुक्ति पाने का यकीन दिलाता था जिसे वह अपने अन्दर महसूस कर रहा था। बम्बई के एक एक पठान से उसे नफरत हो गई थी।

बाशु दादा को कुचले हुए और उसकी कलई उतारकर बम्बई के माफिया साम्राज्य से बाहर खदेड़े हुए अभी करीब एक साल ही हुआ था, लेकिन यह इनाम उस खालीपन के सामने नाकाफी लगता था जो इकबाल की मौत ने पैदा कर दिया था। खालिद पहलवान, जो पहले बाशु का दायां हाथ हुआ करता था, वफादारी के अपने खूंखार, फौरी और कट्टर तेवरों के साथ दाऊद के पास पहुंचा, जिसके प्रति उसके मन में बाशु दादा के पतन के बाद इज्ज़त पैदा हो चुकी थी।

खालिद एक संजीदा, अपनी तरह से विकसित इंसान था, और वह जो कुछ भी करता बहुत बारीकी के साथ सोच विचार कर करता था। वह लम्बे अरसे तक बाशु का दायां हाथ रहा था और माफिया के एक संजीदा खिलाड़ी के रूप में उसकी हैसियत बहुत ही मजबूत थी। बाशु के बाहर हो जानें के बाद दाऊद ने बम्बई में अपनी हैसियत जिस तरह मजबूत की थी उसे लेकर उसके मन में जबरदस्त सराहना का भाव था। खालिद का प्रभाव बहुत दूरगामी था और जो ताक़त दाऊद ने हासिल कर ली थी, उसके चलते दाऊद के साथ सहयोग करना उसे सम्मानजनक बात लगी। उसने अपनी सेवाएं उसे समर्पित कर दी।

खालिद और उसका गिरोह पहले ही अपना नाम कमा चुके थे। उसकी कुख्याती उस वक्त बुलंदी पर पहुंच चुकी थी जब उसने ग्रांट रोड़ पर एक हीरा व्यापारी को शिकार बनाते हुए एक लूट की योजना बनाई थी और उसमें खुद शामिल हुआ था, और जिसके नतीजे में जहां उसके ज्यादातर आदमी गिरफतार हो गए थे वहीं वह खुद साफ़ बच निकला था। आखिरकार वह कोई मामूली सी मछली नहीं था, वह मास्टरमाइंड था, जिसे यूं भी पकड़ के बाहर बने रहना था।

खालिद के निजी साहस और हुकूमत चलाने के उसके एक किस्म के आदिम तरीके को लेकर दाऊद की जो धारणा बनी थी उससे दाऊद को वह युक्ति सूझी थी जिससे वह अपने विरोधी पक्ष को नीचा दिखाने में उसकी मदद ले सकता था। उसने खालिद को अपने पाले में शामिल कर लिया। बदले में खालिद ने पठानों के खिलाफ़ दाऊद की लड़ाई का प्रतीक बन जाने का संकल्प किया। वह जानता था कि इस वक्त दाऊद के मन में पठानों के साम्राज्य को डोंगरी से उखाड़ फेंकने के अलावा और कुछ भी नहीं है। इस अदावत का खात्मा करना, इस मामले में उसका विरोध करने वाले किसी भी व्यक्ति को कुचल देना, दाऊद का लगभ हक और अनिवार्यता बन चुके थे।

इकबाल की हत्या में दो लोगों का बड़ा हाथ था, सईद बाटला और अयूब लाला और इन्हें बख्सने का दाउद का कोई इरादा नहीं था। अपनी वफादारी को साबित करते हुऐ और जो ड्रामा शुरू होने को था उसकी मुनादी करते हुए खालिद ने वादा किया कि इन दोनों को सजा देना उसकी निजी जिम्मेदारी होगी। इस तरह विनाश के अभियान की शुरुआत हुई।

अब तक यह ख़बर पुरी बम्बई में फैल चुकी थी कि अयूब और बाटला पर दाऊद की नजर है। जब इन दोनों को पता चला कि वे दाऊद की हिट लिस्ट में हैं और निश्चित तौर पर उनके सिर पर इनाम हैं, तो वे भूमिगत हो गए। उनकी हर गतिविधि को स्वतंत्र निगरानी में बरता जाने लगा; उनकी हिफ़ाज़त के मुश्किल इंतजाम के लिए रहस्यों की भूलभुलैया रची गई। लेकिन उनका गिरोह अभेद नहीं था, और उन्हें ढूंढ निकालने में खालिद को ज्यादा वक्त नहीं लगा।

एक मुखबिर उसे बताया कि अयूब लाला गिरगांव चौपाटी के एक बार में है। उसने जरा भी वक्त बर्बाद किए बगैर सीधे बार का रास्ता पकड़ा। उसके आदमी उसके पिछे थे। जहां एक तरफ खालिद एक मज़बूत हट्टाकट्टा पहलवान था, वहीं अयूब ख़ुद भी उतना ही हट्टाकट्टा था। लेकिन जहां खालिद बदले की उग्र भावना से प्रेरित था जो उसे अपनी वफादारी को साबित करने के लिए लेना था, वहीं अयूब पहले ही कमज़ोर पड़ चुका था। उसने अपनी कायरता तभी दिखा दी थी जब उसने दाऊद से बचकर भागने का फ़ैसला किया था।

Best Wishes

Dr. Hemang Joshi, BJP Candidate,
Vadodara contituency in Loksabha Election 2024
is elected with the huge margin of 5,82,126 votes.
This is the third highest margin victory in
Gujarat, Loksabha Election 2024

Well Wisher

Dr. Prakash Modha,
Neuro Sergeon, Rajkot
- **Organizing President,**
Neuro logical Surgeon
Socities of India (NSSA)
- **Core Committee Chairman,**
Neuro logical Spine Sergeon
Association of India (NSSI)

Vijaybhai Rajyaguru
Jam Khambhaliya
- **Trustee,**
Saurashtra Kutch
Brahm Samaj
- **President**
Bardai Brahm Samaj,
Jam Khambhaliya

Hirenbhai Thanki,
Rajkot
Gayatri Medical Store-Rajkot
Ex-President,
Saurashtra Medical Association

Sanjaybhai Thanki,
(Palmist) Jam Khambhaliya
Maha Mantri,
Bardai Brahm Samaj,
Jam Khambhaliya

Manoj Rajyaguru
Ex-Councilar,
BJP-Jamkhambhaliya

Virendra Rajyaguru
Vice President
Bardai Brahm Samaj, Jam Khambhaliya

With Best Compliments to

CRIME FORCE

YOGESHBHAI

Mo. 98216 99991

PATEL ESTATE AGENCY

INVESTOR ◆ FLAT ◆ PLOT ◆ SHOPS

Contact for : Sale & Purchase

11, DWARKESH APARTMENT, OPP. MAYUR TALKIES, SUBHASH ROAD, KANDIVALI (W), MUMBI-400 067. TEL.: 28618032 / 28066533

Dr. Ram's
Eye Care
HOSPITAL

Dr. Ram's
Mind Care
HOSPITAL

Dr. Gunja R. Ram

D.O.M.S. (Consultant Ophthalmologist)
Phaco and Lasik Surgeon

- ✓ Cataract Surgery with Advance technique & Premium IOLS
- ✓ Refractive Eye Surgeries (Lasik & ICL)
- ✓ Pterygium Surgery
- ✓ Eye lid Surgeries
- ✓ Laser Procedure for Glaucoma & PCO
- ✓ Medical Management of Cornea, Glaucoma, Retina & all Eye Diseases
- ✓ Mediclaim Facility

Dr. Rajesh S. Ram

M.D. Psychiatry (Gold Medalist)
Consultant Neuropsychiatrist

- ✓ Indoor Facility
- ✓ Implant Surgery for De-Addiction
- ✓ Full Time Psychologist
- ✓ ECT (Brief Pulse)
- ✓ EEG (Electroencephalography)
- ✓ Bio feedback
- ✓ Counselling
- ✓ Psycho Therapy
- ✓ CBT (Cognitive Behavioral Therapy)
- ✓ Couple Therapy
- ✓ IQ Test
- ✓ CAT (Child Apperception Test)
- ✓ TAT (Thematic Apperception Test)
- ✓ Rorschach Test

West Gate Complex, Gate-A,
3rd Floor, Near Raiya Circle,
150 Feet Ring Road, Rajkot 360007

FOR APPOINTMENT
97279 88477
88299 77177

24X7 Emergency

mindcare78@gmail.com
www.mindcarehospitalrajkot.com

Follow us on :

SCOPE OF SERVICES

- Anesthesia & Pain Management
- Arthroplasty & Joint Replacement
- Cardiology
- Cardio-vascular Thoracic Surgery
- Dentistry
- Dermatology & Hair Transplant
- Emergency Medicines
- ENT
- Gastroenterology & Hepatology
- General & Laparoscopic Surgery
- Intensive & Critical Care
- Internal Medicine
- Maxillofacial Surgery
- Intervention Radiology
- Neurology & Electrophysiology
- Neuro & Spine Surgery
- Oncology, Onco. Surgery & Radio Oncology
- Orthopedics, Joint replacement & Trauma
- Pathology & Microbiology
- Plastic & Reconstructive Surgery
- Pediatric / Pediatric Neurology
- Psychiatry
- Pulmonology
- Radiology
- Urolog & Nephrology
- MRI

SUPPORTIVE SERVICES

- Administration
- Ambulance Services
- Bio - Medical
- Blood Storage
- Canteen
- CSSD
- Housekeeping & Security
- Pharmacy
- Physiotherapy

એક માનવ સેવા મંદિર

Gokul Hospital®

શ્રેષ્ઠતા - સત્યતા - પારદર્શકતા

GOKUL HOSPITAL 34 YEARS IN SERVICE

VIDHYANAGAR ROAD
+91 99043 99043

KUVADAVA ROAD
+91 88663 83108

PATIENT SAFETY & QUALITY OF CARE NABH ACCREDITED

RAJKOT - GUJARAT - INDIA

If Undelivered, Please return to :
Raj Complex, Opp. Star Plaza,
Fulchhab Chowk,
Rajkot - 360 001.

To,